| उत्पाद सूची | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क्र. | उत्पाद का नाम | शामिल घटक | रोग जिस पर प्रभावकारी | उपयोग विधि |
| विन्ध्य हर्बल्स पेटेंट कैप्सूल | | | | |
| 1 | **अड़ूसा पत्ती कैप्सूल** | अड़ूसा घनसत्व। | श्वास, कास, प्रमेह रोगों में लाभकारी एवं श्वसन संबंधी विकारों में लाभदायक। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 2 | **आंवला कैप्सूल** | आंवला घनसत्व | विटामिन सी, रसायन, नेत्ररोग, अम्लपित्त में उपयोगी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से। |
| 3 | **अर्जुन कैप्सूल** | अर्जुन घन सत्व एवं गिलोय घनसत्व | हृदय रोग, उच्च रक्तचाप में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध से दिन में दो बार। |
| 4 | **अशोक छाल कैप्सूल** | अशोक छाल घनसत्व | प्रदर एवं गर्भाशय की शिथिलता, अतिसार आदि रोगों में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 5 | **अश्वगंधा कैप्सूल** | अश्वगंधा घनसत्व | बल्य, कमजोरी, शक्तिवर्धक, तनाव में अत्यन्त लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध से दिन में दो बार। |
| 6 | **अविपत्तिकर कैप्सूल** | अविपत्तिकर घनसत्व | अग्निमांद्य, बिबंध, अर्श अजीर्ण, प्रमेह अम्लपित्त, भूख की कमी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 7 | **एलोवेरा कैप्सूल** | एलोवेरा घनसत्व | यकृत (लीवर) मोटापा, उदररोग में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 8 | **एन्टासिड–500 कैप्सूल** | आंवला, मुलैठी के घनसत्व, पीपरामूल घनसत्व, सिद्धामृत भस्म, प्रवाल भस्म, शुक्ति भस्म, यशदभस्म एवं निशोथ घनसत्व। | यह अम्ल पित्त का नाश करता है, एसिडिटी, खट्टी डकार, वात रोग में भी लाभदायक है। | 1–2 कैप्सूल भोजन करने से आधे घण्टे पूर्व दिन में दो बार जल से। |
| 9 | **एन्टीडायरल–500 कैप्सूल** | दारू हल्दी, नागरमोथा, कुड़ा छाल, अतीस, जायफल, धनिया, अदरक, बेल, मरोड़फली, सौंफ, अनार, इन्द्रजौ, मोचरस, धायफूल, पठानी लोध आदि सभी के घनसत्व। | अतिसार, ग्रहणी, अमीबीएसिस एवं उदरशूल में लाभदायक है। | 1–2 कैप्सूल दिन में दो से तीन बार जल से। |
| 10 | **एन्टीवर्म कैप्सूल** | पलाश बीज, वायबिडंग, कुटज छाल सभी के घनसत्व। | कृमिनाशक, उदररोग, ग्रहणी में अत्यन्त उपयोगी होता है। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से |
| 11 | **बहेडा केप्सूल** | बहेड़ा घनसत्व | कास, मेदोरोग, प्रमेह, नेत्र रोग, विबंध | 1–1 कैप्सूल दिन में दो बार |
| 12 | **बला कैप्सूल** | बला घनसत्व | बल्य, वातहर, संधिवात, शुक्रमेह, श्वेत प्रदर, रसायन, वृष्य। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 13 | **ब्राम्ही कैप्सूल** | ब्राम्ही, मुलैठी , शंखपुष्पी, गिलोय सभी के घनसत्व। | स्मरणशक्ति बढ़ाना, मानसिक दुर्बलता, नाड़ी तंत्र की कमजोरी में उपयोगी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध से दिन में दो बार। |
| 14 | **भृंगराज कैप्सूल** | भृंगराज घनसत्व | बालों का झड़ना, यकृत संबंधी विकार, नेत्र रोगों में उपयोगी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 15 | **भुई आंवला कैप्सूल** | भुई आंवला घनसत्व | ज्वर, यकृत रोग, पीलिया में अत्यन्त लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन पूर्व जल से दिन में दो बार। |
| 16 | **च्यवनफोर्ट कैप्सूल** | पिप्पली, काकड़ासिंगी, हरड़, अष्टवर्ग, आंवला एवं अन्य सभी का घनसत्व | शक्तिवर्धक, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाना, श्वास–कांस (मधुमेह रोगी भी ले सकते हैं) में उपयोगी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध से दिन में दो बार। |
| 17 | **कफ–6 कैप्सूल** | अडूसा, हल्दी, तुलसी, मुलैठी, कंटकारी, भुई ऑवला सभी के घनसत्व | कफ, सर्दी, खांसी, श्वास में अत्यन्त उपयोगी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 18 | **डॉयबो प्लस–500 कैप्सूल** | गिलोय, चिरायता, मेथी, गुड़मार, जामुन गुठली, बीजासार, चांदनी पत्ते, तुलसी पत्ते, सदाबहार फूल, अश्वगंधा, शतावर, त्रिफला, त्रिकटु, नीम, बेलपत्र आदि सभी के घनसत्व एवं शिलाजीत स्वर्णमाक्षिक भस्म। | यह मधुमेह में लाभदायक है, इसके लगातार सेवन करने से शर्करा स्तर धीरे–धीरे कम होता है । इसका दुष्प्रभाव नहीं होता, इसके प्रयोग से अन्य रोग भी दूर होते हैं एवं रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। | 1–2 कैप्सूल दिन में दो बार भोजन पूर्व एवं बेहतर लाभ के लिये भोजन उपरान्त हिपेटो कैप्सूल लें। |
| 19 | **दाड़ीमाष्टक कैप्सूल** | दाड़ीमाष्टक घनसत्व | अम्लपित्त, संग्रहणी रोग, अरूचि, अग्नि प्रदीपक | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 20 | **दारू हल्दी कैप्सूल** | दारू हल्दी घनसत्व | पित्तविकारों, गर्भाशय की सूजन, श्वेत प्रदर एवं रक्तप्रदर में उपयोगी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 21 | **दशमूल कैप्सूल** | दशमूल घनसत्व | दुर्बलता, स्त्री रोग एवं कमजोरी, वातरोग में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध या जल से दिन में दो बार। |
| 22 | **गायनो–8 कैप्सूल** | अशोक, अश्वगंधा, आंवला, माजूफल, पठानी लोध्र, गिलोय, पुनर्नवा सभी के घनसत्व एवं प्रवालपिष्टी। | स्त्री रोग, कमर दर्द, प्रदर में लाभप्रद है। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध से दिन में दो बार । |
| 23 | **गिलोय कैप्सूल** | गिलोय घनसत्व | रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाना, ज्वर रोग में उपयोगी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल या दूध से दिन में दो बार। |
| 24 | **गोदंती भस्म कैप्सूल** | गोदंती घनसत्व | पित्तज्वर, आमज्वर, जीर्णज्वर, विषमज्वर, सिर दर्द, श्वेतप्रदर, रक्तस्त्राव, कास, रक्तप्रदर। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 25 | **गोखरू कैप्सूल** | गोखरू घनसत्व | मूत्रविरेचक, धातु रोग, वातरोग, किडनी रोग (पथरी) में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 26 | **गोक्षुरादि गुग्गुलु कैप्सूल** | गोक्षुरादि गुग्गुलु घनसत्व | प्रमेह, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, प्रदर, वातरोग, वातरक्त, शुक्रदोष एवं पथरी में लाभ होता है तथा यह मूत्राशय और मूत्रनली के विकारों को शमन करता है। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 27 | **गोल्ड पावर–500 कैप्सूल** | अश्वगंधा, कैवांच बीज, विधारा, सफेद मूसली, गिलोय, गोखरू, जायफल, कबाबचीनी, चोपचीनी, त्रिकटु, अकरकरा, शतावर, त्रिफला, गोरखमुण्डी आदि सभी के घनसत्व एवं अभ्रक भस्म, शिलाजीत, सालममिश्री। | पौरूष शक्ति बढ़ती है एवं कमजोरी दूर होती है। इससे बल बढ़ता है व ताकत आती है। | 1–2 कैप्सूल दिन में दो बार दूध से। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 28 | **गोरखमुण्डी कैप्सूल** | गोरखमुण्डी घनसत्व | आमपाचक, रक्तपित्त, रक्तशोधक, दीपन, मूत्रजनन, बल्य, रसायन, बाजीकारक। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 29 | **गुड़मार पत्ती कैप्सूल** | गुड़मार पत्ती घनसत्व | मधुमेह, उदररोग में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन पूर्व जल से दिन में दो बार। |
| 30 | **गुडुच्यादि कैप्सूल** | गुडुच्यादि घनसत्व | सर्वज्वर, वातरक्त, दाह, छर्दी, अरूचि, तृष्णा | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 31 | **गुग्गुलु कैप्सूल** | गुग्गुलु घनसत्व | मेदोहर (मोटापा), वातरोग नाशक, संधिवात लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 32 | **हल्दी कैप्सूल** | हल्दी घनसत्व | कफ–वात, शीतपित्त, रक्तशोधक। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 33 | **हरड़ कैप्सूल** | हरड़ घनसत्व | नेत्ररोग, रसायन, अर्श, प्रमेह, अर्श, रक्तातिसार, पाण्डुरोग, जीर्ण ज्वर, अजीर्ण रोग। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 34 | **हर्बोकार्ड–4 कैप्सूल** | अर्जुन, त्रिफला, अश्वगंधा, गिलोय सभी के घनसत्व | हृदय रोग, रक्त विकार, उच्च रक्तचाप में लगातार सेवन करने पर लाभदायक है। | 1–2 कैप्सूल दो बार भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 35 | **हरजोड़ कैप्सूल** | हड़जोड़ घनसत्व | अस्थिभग्न, हड्डी जोड़ने, कैल्सियम लाभप्रद। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 36 | **हरसिंगार पत्ती कैप्सूल** | हरसिंगार पत्ती घनसत्व | कटिवात, कफ, वात को कम करने वाला एवं ज्वर में लाभदायक। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 37 | **हिपैटो–500 कैप्सूल** | पुनर्नवा, अर्जुन, भृंगराज, गिलोय, वायबिडंग, पिप्पली, सरपोंखा, पित्त पापड़ा, कडुचिरायता, भुई आंवला एवं मकोय पंचांग आदि के घनसत्व। | यकृत विकार, पाण्डु रोग, कामला में लाभकारी, इसके लगातार सेवन करने से यकृत मजबूत होता है। | 1–2 कैप्सूल भोजन पूर्व दिन में दो या तीन बार। |
| 38 | **जामुन कैप्सूल** | जामुन गुठली घनसत्व | मधुमेह, बहुमूत्रता, अतिसार, प्रदर रोग में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 39 | **जटामांसी कैप्सूल** | जटामांसी घनसत्व | नाड़ी तंत्र, सिरशूल, मानसिक थकान, अवसाद, अनिंद्रा उपयोगी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध या जल से दिन में दो बार। |
| 40 | **कालीमूसली कैप्सूल** | कालीमूसली घनसत्व | वीर्यवर्द्धक, शक्तिवर्द्धक, मूत्रजनन, बल्य, अर्श, कामला, श्वास, अतिसार, शूल। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 41 | **कालमेघ कैप्सूल** | कालमेघ घनसत्व | ज्वर, विषम ज्वर, मलेरिया, चिकनगुनिया में अत्यन्त उपयोगी। | गिलोय कैप्सूल के साथ 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध से। |
| 42 | **कांचनार गुग्गुलु कैप्सूल** | कांचनार गुग्गुलु घनसत्व | गलगण्ड, गण्डमाला, शोथ (थायराइड), अपच, ग्रन्थि, गले में और नाक के भीतर गांठे बढ़ना, कुष्ठ व भगन्दर आदि रोग। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 43 | **कांचनार कषाय कैप्सूल** | कांचनार कषाय घनसत्व | गंडमाला, गलगंड, व्रण, गुल्म, कुष्ठ, भगंदर, शरीर की कोई भी ग्रंथि (गॉठ)। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 44 | **कंटकारी कैप्सूल** | कंटकारी घनसत्व | कास–श्वास, कफ–वात, अग्निदीपन कृमिघ्न में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 45 | **करेला कैप्सूल** | करेला घनसत्व | मधुमेह, ज्वर, पित्तवर्द्धक में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 46 | **कटसरैया कैप्सूल** | कटसरैया घनसत्व | यकृत रोग, पिंडली में दर्द, शोथहर, वातरोग, विषनाशक, कटिवात, शरंजक। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 47 | **केवांच बीज कैप्सूल** | केवांच बीज घनसत्व | पौष्टिक, मूत्रजनक, शुक्रल, वाजीकरण, बल्यवर्धक में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध/जल से दिन में दो बार। |
| 48 | **कुटज छाल कैप्सूल** | कुटज छाल घनसत्व | अतिसार, ग्रहणी, अमीबिओसिस, पेचिश एवं ज्वर में जब पतले दस्त हो तो इसका उपयोग लाभदायी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 49 | **एल–5 कैप्सूल** | भू–आंवला, कुटकी, चिरायता, गिलोय, पुनर्नवा सभी के घनसत्व | पीलिया, यकृत रोग, पाण्डुरोग में अत्यन्त उपयोगी। | 1–2 कैप्सूल भोजन से 30 मिनट पूर्व जल से । |
| 50 | **लहशुन कैप्सूल** | लहशुन घनसत्व | गैस, इसके सेवन से मंदाग्नि, उदर वायु, पेट दर्द दूर होता है यह दीपन–पाचक तथा वायुनाशक है। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 51 | **ल्युकोरिल–500 कैप्सूल** | पुष्यानुग चूर्ण, शतावर, नागकेशर, अश्वगंधा, माजूफल, त्रिफला, पठानी लोध्र, अशोक आदि सभी के घनसत्व। | श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर, अनियमित मासिक स्त्राव, कटिशूल में लाभदायक। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरान्त जल या चावल के धोवन से रोगानुसार दिन में दो बार। |
| 52 | **लेक्स कैप्सूल** | अमलतास घनसत्व | कब्ज, मृदुविरेचक, उदर रोग में उपयोगी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल या दूध से दिन में दो बार। |
| 53 | **लौह कैप्सूल** | स्वर्णमाक्षिक भस्म एवं मण्डूर भस्म त्रिफला और गिलोय के घनसत्व। | रक्त की कमी, अर्श, शारीरिक दुर्बलता में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध से। |
| 54 | **महारासनादि क्वाथ कैप्सूल** | महारासनादि क्वाथ घनसत्व | समस्त वात व्याधि, शोथ में उपयोगी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 55 | **महासुदर्शन कैप्सूल** | महासुदर्शन घनसत्व | ज्वर, विषम ज्वर, मलेरिया में अत्यन्त लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल दूध से भोजन उपरांत दिन में दो बार। |
| 56 | **महायोगराज गुग्गुलु कैप्सूल** | महायोगराज गुग्गुलु घनसत्व | वातव्याधि, आमवात, पक्षाघात, संधिवात, वातरक्त, श्वांस, खांसी शोथहर, शूलहर एवं सभी प्रकार के रोगों में हितकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 57 | **मकोय कैप्सूल** | मकोय घनसत्व | पाण्डु रोग एवं पेट से संबंधित विकारों, प्रयोग शोथ में लाभदायक। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 58 | **मंजिष्ठ कैप्सूल** | मंजिष्ठ घनसत्व | रक्तशोधक, पित्तनाशक में प्रभावकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 59 | **मंजिष्ठादि कैप्सूल** | मंजिष्ठ, सनायपत्ती, बाल हरड़ गुलाब पंखुड़ी, निसोथ, मिश्री | उदरविकार, रक्तविकार, पित्तनाशक, त्वचा रोग लाभदायक। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 60 | **मेधा–500 कैप्सूल** | मालकांगनी, ब्राम्ही, शंखपुष्पी, पीपरामूल, बच, सोंठ, शतावर, अश्वगंधा, गिलोय, त्रिकटु, अर्जुन, जटामांसी, भृंगराज सभी के घनसत्व एवं मुक्तापिष्टी | स्मरण शक्ति, बुद्धि का विकास आदि में लाभदायक है उन्माद, अपस्मार। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरान्त सुबह–शाम दूध से। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 61 | **मुलेठी कैप्सूल** | मुलेठी घनसत्व | कास, बल्य, मूत्रजनक, शोथहर, रसायन होता है तथा अम्लपित्त में लाभकारी होता है। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 62 | **मूत्रसंग्रहणीय कैप्सूल** | मूत्रसंग्रहणीय घनसत्व | बहुमूत्रता, मधुमेह, स्त्रीरोग, प्रमेह | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 63 | **मूत्रविरेचन कैप्सूल** | मूत्रविरेचन घनसत्व | मूत्रल, शोथहर, अश्मरी में लाभदायक। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 64 | **मूत्रविरेचनीय कैप्सूल** | मूत्रविरेचनीय घनसत्व | मूत्रकृच्छ, अश्मरी, मूत्राघात, शोथ | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 65 | **नागरमोथा कैप्सूल** | नागरमोथा घनसत्व | कफ, हृदय रोग, अतिसार, बालों को ध ोने, आंव, दस्त, पेट रोग, मूत्ररोग आदि में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरान्त सुबह–शाम दूध से। |
| 66 | **नीम पत्ती कैप्सूल** | नीम पत्ती घनसत्व | त्वचा रोग, रक्तशोधक में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 67 | **निम्बादि कैप्सूल** | निम्बादि चूर्ण घनसत्व | आमवात, मुहासे, त्वचा रोग, कुष्ठ, अर्श, व्रण, रूसी में उपयोगी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 68 | **निर्गुण्डी कैप्सूल** | निर्गुण्डी घनसत्व | शूल, शोथ, आमवात,चर्मरोग, कुष्ठ, कफ ज्वर, में अत्यन्त लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 69 | **निशोथ कैप्सूल** | निशोथ घनसत्व | वातनाशक, यकृत रोग, अम्लपित्त में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 70 | **पंचकोल कैप्सूल** | पंचकोल घनसत्व | अरूचि, यकृत विकार, गुल्म, शूल में लाभकारी, आमपाचक, वातशामक होता है। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 71 | **पंचनिम्बा कैप्सूल** | पंचनिम्बा घनसत्व | महाकुष्ठ, कुष्ठ, श्वित्र, रक्त विकार, वातरक्त, समस्त त्वचा रोगों | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 72 | **पंचसकार कैप्सूल** | पंचसकार घनसत्व | कब्ज, उदर रोग, अजीर्ण, मलावरोध को दूर करने में लाभदायक। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 73 | **पाषाणभेद कैप्सूल** | पाषाणभेद घनसत्व | पथरी, प्रोस्टेट, मूत्रघात। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 74 | **पथ्यादि कैप्सूल** | पथ्यादि घनसत्व | शिरोरोग, यकृत–प्लीहा रोग, कामला, पाण्डु, बिबंध | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 75 | **पुआड़ बीज कैप्सूल** | पुआड़ बीज घनसत्व | त्वचारोग, वातरोग, कुष्ठरोग में लाभप्रद। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 76 | **पुनर्नवामूल कैप्सूल** | पुनर्नवामूल घनसत्व | शोथ, उदररोग, कामला, पाण्डु, मूत्रविकार में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 77 | **पुष्यानुग कैप्सूल** | पाठा जामुन गुठली आम गुठली पाषाण भेद भटकटैया मोचरस लज्जालू पदमकेशर कड़वा अतीस नागरमोथा बेलगूदा पठानीलोध गेरू कायफल सौंठ कालीमिर्च मुनक्का रक्त चंदन अरलू (सोनापाठा) कुटज धायफूल मुलैठी अर्जुन कुमकुम | रक्तार्श, अतिसार, रक्त प्रदर एवं अन्य स्त्री रोग, स्त्रियों में प्रदर रोगों में लाभप्रद। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 78 | **रास्नापत्ती कैप्सूल** | रास्नापत्ती घनसत्व। | ज्वर, कफ, श्वासनली की सूजन, वात रोग में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 79 | **रास्नासप्तक क्वाथ कैप्सूल** | रास्नासप्तक क्वाथ घनसत्व | शोथ, संधिवात, वातव्याधि | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 80 | **सफेद मूसली कैप्सूल** | सफेद मूसली घनसत्व। | पुष्टिकारक, वातरोग नाशक, शक्तिवर्धक तथा रसायन। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध/जल से दिन में दो बार। |
| 81 | **सलाकी कैप्सूल** | सलाकी घनसत्व | जोड़ों का दर्द, वातरोग। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 82 | **सनायपत्ती कैप्सूल** | सनायपत्ती घनसत्व। | कब्जीयत, उदर रोग में अत्यन्त लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत गुनगुने जल से दिन में दो बार। |
| 83 | **सरपौंखा कैप्सूल** | सरपौंखा घनसत्व | विषमज्वर, प्लीहा, बवासीर में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 84 | **सर्पगंधा कैप्सूल** | सर्पगंधा घनसत्व | उन्माद, उच्च रक्त चाप, हृदय रोग, अनिद्रा में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 85 | **सारस्वत कैप्सूल** | सारस्वत घनसत्व | अनिद्रा, धैर्य, धारणाशक्ति, दुर्बलता, उन्माद, अपस्मार, स्मरणशक्ति को बढ़ाने में उपयोगी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 86 | **शतावर कैप्सूल** | शतावर घनसत्व। | स्तन्यवर्धक, अम्लपित्त नाशक, दूधवर्द्धक दौर्बल्य में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध/जल से दिन में दो बार। |
| 87 | **शिग्रु कैप्सूल (मुनगा पत्ती)** | मुनगापत्ती घनसत्व। | कोलेस्ट्रोल लेवल को कम करता है, संधिवात, वृक्कशोथ को कम करता है, पथरी, हृदयरोग में लाभकारी | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध/जल से दिन में दो बार। |
| 88 | **शिलाजीत कैप्सूल** | शुद्ध शिलाजीत | योगवाही, प्रमेह, पौरूष शक्तिवर्द्धक, मूत्रविकार, क्षय, पथरी, पाण्डु में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध/जल से दिन में दो बार। |
| 89 | **स्लिम–500 कैप्सूल** | बहेड़ा, हरड़, आंवला, काली मिर्च, पिप्पली, अदरक, चित्रकमूल, काला जीरा, कुटकी, नीम, नागरमोथा, अपामार्ग, चव्य, मेथी, हल्दी, पुनर्नवा, बीजासार, निशोथ आदि के घनसत्व एवं स्वर्णमाक्षिक भस्म, मेदोहर गुगल एवं शिलाजीत। | इसके लगातार सेवन करने से मोटापा धीरे–धीरे दूर होता है, इसके दुष्प्रभाव नहीं है, कमजोरी भी नहीं आती, शरीर में अतिरिक्त जमा वसा का शमन करता है, मोटापे के कारण उत्पन्न थकान को दूर करता है। | 1–2 कैप्सूल दिन में दो बार एवं बेहतर लाभ के लिये स्लिम क्वाथ के साथ सेवन करें। |
| 90 | **स्ट्रेस–5 कैप्सूल** | ब्राम्ही, जटामांसी, मालकांगनी, सर्पगंधा सभी के घनसत्व | मानसिक तनाव, उच्च रक्तचाप, अनिद्रा में लाभदायक। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत दूध या जल से दिन में दो बार। |
| 91 | **त्रिफला कैप्सूल** | त्रिफला घनसत्व | उदर रोग, कब्ज, प्रमेह में उपयोगी तथा मेदोहर में लाभकारी होता है। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 92 | **त्रिफला गुग्गुलु कैप्सूल** | त्रिफला गुग्गुलु घनसत्व | वातजशूल, भगंदर, शोथ, अर्श और रक्त विकृति नष्ट होती है, यह उत्तम रेचक, पाचन व वायुनाशक और रक्तशोधक है, वात व कुष्ठ रोगों को नष्ट करता है। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 93 | **त्रिकटु कैप्सूल** | त्रिकटु घनसत्व | अग्निमांद्य एवं श्वास–कास में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 94 | **त्रयोदशांग गुग्गुलु कैप्सूल** | त्रयोदशंग गुग्गुलु घनसत्व | कटिग्रह, गृध्रसी, हनुग्रह, बाहुशूल, जानू स्तम्भ, वात–कफ रोग, योनिदोष, अस्थिभग्न आदि रोगों में उपयोगी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 95 | **तुलसी पत्ती कैप्सूल** | तुलसी पत्ती घनसत्व | कफ, कास, श्वास,प्रतिश्याय, प्रतिरोधक, विषमज्वर लाभदायक। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 96 | **वात कैप्सूल** | महारास्नादि क्वाथ, निर्गुण्डी, अश्वगंधा, तगर के घनसत्व, गोदंती भस्म एवं प्रवाल पिष्टी। | वात रोग, आमवात, शोथ, संधिवात, ग्रधसी कटिशूल आदि में उपयोगी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत वात क्वाथ चूर्ण जल से दिन में दो बार। |
| 97 | **वैश्वानर कैप्सूल** | वैश्वानर घनसत्व | आमवात, गुल्म, हृदय रोग, प्लीहा वृद्धि, ग्रंथिरोग, अर्श, वातजन्य विकार, विविध प्रकार के शूल। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 98 | **वायबिडंग कैप्सूल** | वायबिडंग घनसत्व | कृमिनाशक, रक्तशोधक, वातहर, दीपन में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 99 | **वरूणादि कवाथ कैप्सूल** | वरूणादि कवाथ घनसत्व | अश्मरी एवं वात–व्याधि आदि रोगों को नष्ट करता है। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 100 | **बेल गूदा कैप्सूल** | बेल गूदा घनसत्व | प्रवाहिका, अर्श, संग्रहणी, कर्ण रोग, वातरोग, अतिसार, कामला, शोथ, वमन, ज्वर। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 101 | **विडंगादि कैप्सूल** | वायबिडंग, सेंधानमक, जवाखार, हरड़ | इस कैप्सूल को मट्ठे के साथ सेवन करने से सभी प्रकार के कृमि रोग को नष्ट करने में लाभदायक। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 102 | **विदारीकंद कैप्सूल** | विदारीकंद घनसत्व | शक्तिवर्धक, पुष्टिकारक, रसायन, धातुरोग में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 103 | **विजयसार कैप्सूल** | विजयसार घनसत्व | मधुमेह, प्रमेह, कृमिघ्न, रक्तविकार, रक्तपित्त, श्वेतकुष्ठ, बालों को उत्तम बनाने वाला, कुष्ठघ्न में लाभकारी। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 104 | **विल्वादि कैप्सूल** | विल्वादि घनसत्व | मस्तिष्क तथा ग्रहणी, अतिसार, उदर रोग स्नायु संबंधी रोग में लाभदायक। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| 105 | **योगराज गुग्गुलु कैप्सूल** | योगराज गुग्गुलु घनसत्व | वातरोग, कुष्ठ, अर्श, प्रमेह, वातरक्त, नाड़ी व्रण, गठिया, नासूर आदि सभी रोगों को ठीक करता है। | 1–2 कैप्सूल भोजन उपरांत जल से दिन में दो बार। |
| | | विन्ध्य हर्बल्स पेटेंट वटी/टेबलेट | | |
| 106 | **एण्टासिड वटी** | शर्करा रहित अविपत्तिकर घनसत्व, आंवला घनसत्व, मूलैठी घनसत्व, पीपरामूल घनसत्व, मुक्ता–शुक्ति भस्म, शंख भस्म। | अम्लपित्त, उद्गार (डकार), सीने में जलन, विविध आटोप, उदररोग में उपयोगी। | 2–3 गोली दिन में दो बार पानी के साथ। |
| 107 | **कैल्शियम वटी** | गोदंती भस्म, प्रवाल भस्म, मुक्ता शुक्ती भस्म, शंख भस्म, अर्जुन धनसत्व, हरजोड़ घनसत्व | कैल्शियम की कमी, संन्धि शूल, अस्थि क्षय, अस्थि भग्न, सन्धिवात, | 1–2 गोली दिन में दो बार दूध के साथ। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 108 | **विन्ध्य हर्बल डी स्टोन टेबलेट** | वरूण, पथरचटा, गोखरू, पुनर्नवा, कुटकी, गिलोय, चोपचीनी, कबाबचीनी, दालचीनी, श्वेतपपटी, सज्जीखार, हर्जरूलयहूद भस्म, शुद्ध शिलाजीत। | अश्मरी, मूत्रकृच्छ, कटिशूर, पथरी, | 2–4 गोली दिन में दो बार |
| 109 | **विन्ध्य हर्बल पौष्टिक वटी** | शतावर घनसत्व, सफेद मूसली घनसत्व, अश्वगंधा घनसत्व, विदारीकंद घनसत्व, निर्गण्डी घनसत्व, पीप्ली घनसत्व, आवला घनसत्व, पुर्ननवा घनसत्व, हल्दी घनसत्व, मुलेठी घनसत्व, तुलसी घनसत्व, बला घनसत्व | दौरबल्यता, शुक्रक्षय, वातरोग, रसायन एवं बाजीकर | 2–3 गोली दिन में दो बार पानी के साथ। |
| 110 | **विन्ध्य हर्बल स्लीपिंग वटी** | अर्जुन घनसत्व, भांग बीज, ब्राम्ही घनसत्व, गांद, जटामासी घनसत्व, कुशमंड घनसत्व, निर्गुण्डी घनसत्व, रासना घनसत्व, शंखपुष्पी घनसत्व, सर्पगंधा घनसत्व, तगर घनसत्व, वच घनसत्व | अनिद्रा, स्मृति दौर्बल्य, तनाव, उच्चरक्तचाप, भ्रम, अपस्मात, उन्माद | 1–2 गोली दिन में दो बार दूध के साथ। |
| 111 | **विन्ध्य हर्बल वेदनाहर वटी** | रास्ना घनसत्व, रेणूका घनसत्व, पारसिक यावनी घनसत्व, यशद भस्म, गोदंती भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, महावातविध्वनसक भस्म | सन्धिवात, सन्धिशोथ, गृध्रसी, आमवात, कटिवात | 2–4 गोली दिन में दो बार |
| | | **विन्ध्य हर्बल्स पेटेंट चाय** | | |
| 112 | **अर्जुन हर्बल टी (चाय)** | अर्जुन छाल, दालचीनी, लौंग, इलायची | यह हृदय औषधि है इसका लगातार सेवन करने से उच्च रक्तचाप एवं शरीर के लिए स्फूर्ति दायक, कोलेस्ट्राल को कम करने में सहायक होता है। | सुबह–शाम चाय की तरह उबालकर दूध के साथ सेवन करें |
| 113 | **विन्ध्य तुलसी चाय** | तुलसी, हल्दी, सौंठ, पिप्पली, कालीमिर्च, पुष्करमूल, वनतुलसी | कास–श्वास, आम पाचक, उदर रोग, कृमि में लाभकारी। | 1 चम्मच पानी के साथ उबाल कर। |
| | | **पेटेन्ट आयुर्वेदिक चूर्ण/क्वाथ** | | |
| 114 | **विन्ध्य एन्टी अमीबिया चूर्ण** | सौंफ, बाल हरड़, सोंठ, कुटकी, बेल गूदा, ईसबगोल की भूसी, कुड़ा छाल, वायबिडंग, गुलाब के फूल एवं अन्य | यह अमीबिओसिस के लिये अच्छा चूर्ण है, सभी तरह के अमीबा नष्ट हो जाते हैं, अतिसार, पेट दर्द, गृहणी, अर्श में लाभकारी हेाता है। | 3–6 ग्राम. चूर्ण गुनगुने पानी से भोजन उपरान्त। |
| 115 | **विन्ध्य मधुमुक्ति प्लस चूर्ण** | आंवला, पीपल, चित्रकमूल, कलौंजी, मेथी, कुटकी, कालमेघ, इन्द्रायण जड़, धायफूल, दारू हल्दी, नागरमोथा, भुई आंवला, गुड़ची, भृंगराज, गुड़मार, ब्राम्ही (भू–निम्ब) एवं अन्य। | प्रमेह, मधुमेह, बहुमुद्रता एवं प्रचुरता। | 3 से 6 ग्राम सुबह–शाम जल से। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 116 | **विन्ध्य पाचक आंवला सुपारी** | आंवला, जीरा, नमक, अजवाईन, कालीमिर्च, पिप्पली, अनारदाना, सौंफ, पुदीना पत्ती, नींबू रस, अदरक रस। | यह मुख शुद्धि हेतु गुटका है जिसको कभी भी सुपारी की तरह उपयोग किया जा सकता है, इससे पाचन शक्ति बढ़ती है तथा विटामिन सी की कमी में उपयोगी। | मुखशोधन हेतु आवश्यकतानुसार। |
| 117 | **विन्ध्य पौष्टिक चूर्ण** | अश्वगंधा, सफेद मूसली, शतावर, अनन्तमूल, मुलैठी , इलायची एवं अन्य। | शारीरिक दुर्बलता, शक्तिवर्धक, रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। | 3–6 ग्राम. दूध या गुनगुने पानी से दिन में दो बार । |
| 118 | **विन्ध्य स्लिम क्वाथ चूर्ण** | त्रिफला, सोंठ, गिलोय, कुटकी, वायबिडंग, पुनर्नवा | अतिरिक्त चर्बी (मोटापा) हटाने में, मेद को कम करने में सहायक होता है। | सुबह–शाम स्लिम कैप्सूल के साथ 5–10 ग्राम चूर्ण का काढ़ा बनाकर भोजन के बाद लें। |
| 119 | **विन्ध्य ट्राईगोल चूर्ण** | हरड़, बहेड़ा, आंवला, इसबगोल। | विबन्ध, अर्श, ग्रहणी एवं उदररोग में लाभदायक। | 3 से 6 ग्राम गुनगुने पानी के साथ। |
| | | पेटेन्ट ग्रेन्यूल्स | | |
| 120 | **विन्ध्य ग्रोविट ग्रेन्यूल्स** | अश्वगंधा, शतावरी, विदारीकंद, शंख भस्म, लौह भस्म, सौंठ गेरू, गिलोय, मोचरस, नागरमोथा, पीपली, मिश्री, शंखपुष्पी, ब्राम्ही, वायविडंग | याददाशत बढ़ाए, भूख बढ़ाए, पाचन दुरस्त रखे, हड्डियों को मजबूत बनाए, बल बढ़ाए, स्वस्थ रखे | 1–1 चम्मच सुबह शाम दूध के साथ |
| | | पेटेन्ट क्रीम/आईन्टमेन्ट/तेल | | |
| 121 | **विन्ध्य फुट क्रेक क्रीम** | शुद्धगंधक, घी, कपूर, एरण्डी तेल, कत्था, सुहागा, मोम, कोकम । | यह क्रीम पैर की एड़ी को मुलायम करने के लिए, एड़ी फटने पर लाभकारी है, बारिश में पैर उगलियों के बीच होने वाली कंदरी रोग में लाभकारी । | सोने के पूर्व पैर हल्के गुनगुने पानी से साफ करने के उपरान्त सूखे कपड़े से सुखा देने के पश्चात् क्रीम को लगाकर हल्की मालिश करें। सुबह पैर को गुनगुने पानी से धो लें। 15 से 20 दिन में लाभकारी। |
| 122 | **विन्ध्य हर्बल बाम** | पोदिना सत्व, कपूर, गंधपुरा तेल, वैसलीन | सिर दर्द, कास–श्वास, मोच, एवं घुटने के दर्द में आदि में उपयोगी। | दर्द वाली जगह पर दो से तीन बार लगाकर हल्की मालिश करें, गरम कपड़ो से ढककर रखें। |
| 123 | **विन्ध्य केश तैल** | भृंगराज तेल, मालकांगनी तेल, नीम छाल, अर्कमूल, गुंजा, कटसरैया (पियाबासा) स्वरस, निर्गुण्डी स्वरस | बालों का झड़ना, बालों का सफेद होना एवं रूसी में लाभकारी होता है। | सिर में प्रतिदिन लगाकर मालिश करना। |
| 124 | **विन्ध्य पीड़ाहारी तेल** | निर्गुण्डी तेल, महानारायण तेल, महाविषगर्भ तेल, चंदनबलाक्षादि तेल, पिपरमेंट, कर्पूर, नीलगिरी तेल, महामाष तेल, गंधपुरा तेल | जोडों के दर्द, मांस पेशियों के खिचाव व सिर दर्द में तुरन्त लाभकारी होता हे। | दर्द वाली जगह पर दो से तीन बार लगाकर हल्की मालिश करें। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 125 | **विन्ध्य स्किन आइंटमेंट** | चक्रमर्द, कपूर, सुहागा, गंधक, घी, फिटकरी, मोम, हरताल, मैनसिल, नीला थोथा, नीम तेल, करंज तेल। | यह दाद, खाज, खुजली, एग्जिमा एवं अन्य त्वचा रोग में त्वरित लाभकारी है तथा फोड़े–फुंसियों में और कुष्ठ रोग में लगातार उपयोग करने से लाभ होता है । | प्रभावित जगह को साफ कर दिन में दो से तीन बार आईंटमेंट लगाये। |
| | | **शास्त्रोक्त एकल हर्बल चूर्ण** | | |
| 124 | **अड़ूसा पत्ती चूर्ण** | अड़ूसा पत्ती | श्वास, कास, प्रमेह रोगों में लाभकारी एवं श्वसन संबंधी विकारों में लाभकारी। | 3–6 ग्राम सुबह–शाम शहद के साथ। |
| 125 | **आंवला चूर्ण** | आंवला फल | अम्ल–पित्त, नेत्र रोग, रक्त स्त्राव, प्रमेह, पाचन–क्रिया, विटामिन सी से भरपूर रसायन। | 3–6 ग्राम सुबह–शाम पानी से। |
| 126 | **अर्जुन छाल चूर्ण** | अर्जुन (कोहा) छाल | हृदय रोग, प्रमेह, यकृत रोगों में लाभकारी होता है तथा अस्थिसंधानक है। | 3–6 ग्राम सुबह–शाम पानी या दूध के साथ। |
| 127 | **अशोक छाल चूर्ण** | अशोक छाल | प्रदर एवं गर्भाशय की शिथिलता, अतिसार आदि रोगों में लाभकारी होता है। | 3–6 ग्राम सुबह–शाम दूध या चावल के धोवन के साथ। |
| 128 | **अश्वगंधा चूर्ण** | अश्वगंधा जड़ | कफ वात, बाजीकर, संधिवात, तनाव, क्षय, बलदायक, वात रोग में लाभकारी होता है तथा उत्तम पौष्टिक है। | 3–6 ग्राम सुबह–शाम दूध के साथ भोजन उपरान्त। |
| 129 | **बेल गूदा चूर्ण** | बेल फल | अर्श, संग्रहणी, अतिसार, वमन आदि रोगों में लाभकारी होता है। | 3–6 ग्राम सुबह–शाम जल से। |
| 130 | **बहेड़ा चूर्ण** | बहेड़ा छिलका | खांसी, गले के रोग (थायराईड) , ज्वर, प्लीहावृद्धि, अतिसार में लाभकारी होता है। | 3–6 ग्राम सुबह–शाम शहद या जल से। |
| 131 | **भुई आंवला चूर्ण** | भुई आंवला पंचांग | ज्वरहर, यकृत रोग, कफ, मूत्ररोग, पीलिया, पाण्डु आदि रोगों को नष्ट करता है। | 3–6 ग्राम भोजन पूर्व जल से। |
| 132 | **चन्द्रशूर बीज चूर्ण** | चन्द्रशूर बीज | थॉयराइड, अतिसार, वातशामक, गर्भाशय संकोचक, संग्रहणी में लाभकारी होता है तथा बचपन में ऊंचाई बढ़ाने में सहायक। | 1–3 ग्राम शक्कर एवं नारियल पानी से। |
| 133 | **चित्रक मूल चूर्ण** | चित्रक मूल | अपचन, पेट का फूलना, दीपन, पाचन, अर्श, ग्रहणी एवं वात रोग को नष्ट करता है। | 1–2 ग्राम सुबह–शाम शहद या जल से। |
| 134 | **दारू हल्दी चूर्ण** | दारू हल्दी | ज्वर, कफ एवं पित्तविकारों, गर्भाशय की सूजन, श्वेत प्रदर एवं रक्तप्रदर में उपयोगी। | 3–5 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ। |
| 135 | **गिलोय चूर्ण** | गिलोय तना | प्रमेह, श्वास, वातरोग, एवं ज्वरहर तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। | 3–6 ग्राम सुबह– शाम शहद या पानी से। |
| 136 | **गोखरू चूर्ण** | गोखरू फल | मूत्रविरेचक, धातु रोग, वातरोग, किडनी रोग आदि में लाभकारी होता हैं। | 3–6 ग्राम सुबह–शाम। |
| 137 | **गोरखमुंडी चूर्ण** | गोरखमुंडी | आमपाचक, रक्त पित्त, रक्तदोष में लाभकारी होता है तथा बाजीकर है। | 1–3 ग्राम सुबह–शाम पानी के साथ। |
| 138 | **गुड़मार पत्ती चूर्ण** | गुड़मार पत्ती | प्रमेह, कुष्ठ, कास, मधुमेह, उदररोग में लाभकारी होता है। | 1–3 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 139 | **हरड़ चूर्ण** | हरड़ फल | रसायन, नेत्ररोग, जीर्ण ज्वर, अतिसार, अर्श, अजीर्ण, प्रमेह आदि रोग में लाभकारी होता है। | 3–6 ग्राम सुबह–शाम। |
| 140 | **हरसिंगार पत्ती चूर्ण** | हरसिंगार पत्ती | कटिवात, कफ, वात को कम करने वाला एवं सायटिका रोग को नष्ट करने वाला होता है। | 3–6 ग्राम पानी व शहद से सुबह–शाम। |
| 141 | **जामुन गुठली चूर्ण** | जामुन गुठली | मधुमेह (डायबिटीज), प्रदर रोग को नष्ट करने वाला होता है। | 1–3 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ । |
| 142 | **जटामांसी चूर्ण** | जटामांसी कंद | मस्तिष्क व नाड़ी तंत्र में अत्यन्त उपयोगी होता है। | चिकित्सक के परामर्श अनुसार। |
| 143 | **काली मूसली चूर्ण** | काली मूसली जड़ | वीर्यवर्धक, शक्तिवर्धक आदि रोग में लाभकारी होता है। | 3–6 ग्राम सुबह–शाम दूध के साथ । |
| 144 | **कालमेघ पंचांग चूर्ण** | कालमेघ पंचांग | मलेरिया, विषम ज्वर, यकृत रोग, पाण्डुरोग, कामला, प्लीहावृद्धि आदि रोगों में अत्यन्त लाभकारी होता है। | 3–6 ग्राम सुबह–शाम दूध या जल के साथ । |
| 145 | **केवटी छाल चूर्ण** | केवटी छाल | प्रमेह, मधुमेह, बल्य, प्रदर आदि में लाभकारी होता है। | 3–5 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ। |
| 146 | **खरेटी चूर्ण** | खरेटी पंचांग | मूत्र रोग, श्वेत प्रदर, वातव्याधि, सर्वांगवात आदि रोग में लाभदायक है। | 3–6 ग्राम सुबह–शाम दूध/पानी के साथ। |
| 147 | **किंवाच बीज चूर्ण (शोधित)** | किंवाच बीज | पौष्टिक, मूत्रजनक, शुक्रल, वाजीकरण, कंपवात, वातरोग, बल्यवर्धक होता है। | 3 से 5 ग्राम दूध के साथ सुबह–शाम। |
| 148 | **कुड़ा छाल चूर्ण** | कुड़ा छाल | अतिसार, संग्रहणी, रक्तपित्त, त्वचारोग, पित्तविकार एवं पाचक, पित्त को शांत करने वाला होता है। | 3 से 5 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ एवं काढ़ा बनाकर। |
| 149 | **कुटकी चूर्ण** | कुटकी | यकृत एवं प्लीहा, तथा आंत पर प्रभावकारी, मलभेदक, हृदय को हितकर, प्रमेह, ज्वर में लाभकारी होता है। | 500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम सुबह शाम जल के साथ। |
| 150 | **मकोय चूर्ण** | मकोय पंचांग | पाण्डु रोग में तथा इसका प्रयोग शोथ, कुष्ठ, नेत्र रोग, हृदय रोग, अर्श एवं ज्वर में लाभदायक होता है। | 3 से 5 ग्राम सुबह–शाम दूध या जल के साथ। |
| 151 | **मंजिष्ठ चूर्ण** | मंजिष्ठ | रक्तशोधक, पाचक, त्वचा रोगों में लाभकारी तथा मुहासों में प्रभावकारी होता है। | 3–5 ग्राम दूध या जल के साथ। |
| 152 | **मुलैठी चूर्ण** | मुलैठी जड़ | कास, बल्य, मूत्रजनक, शोथहर, रसायन होता है तथा अम्लपित्त में लाभकारी होता है। | 3–6 ग्राम सुबह–शाम पानी या शहद के साथ। |
| 153 | **नागरमोथा चूर्ण** | नागरमोथा कंद | कफ, हृदय रोग, अतिसार, बालों को धोने, आंव, दस्त, पेट रोग, मूत्ररोग आदि में लाभकारी होता है। | 3–6 ग्राम जल के साथ। |
| 154 | **नागकेशर चूर्ण** | पुंकेशर | रक्तस्तम्भक, ज्वरहर, अर्शाघ्न, मूत्रल और गर्भ स्थापक। | 1–3 ग्राम मक्खन के साथ। |
| 155 | **नीम पत्ती चूर्ण** | नीम पत्र | त्वचा रोग, नेत्र रोग, यकृत रोग, ज्वरहर, रक्तशोधक आदि में लाभकारी होता है। | 3–6 ग्राम सुबह–शाम जल या शहद के साथ। |
| 156 | **निर्गुण्डी चूर्ण** | निर्गुण्डी पत्र | शूल, शोथ, आमवात, चर्मरोग, कुष्ठ, कफ ज्वर, नेत्ररोग में अत्यन्त लाभकारी होता हैं | 3–5 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 157 | **पाषाणभेद चूर्ण** | पाषाणभेद | शोथहर, मूत्रल एवं पथरी रोग में प्रभावकारी होता है। | 3–5 ग्राम जल के साथ सुबह–शाम। |
| 158 | **पठानी लोध चूर्ण** | पठानी लोध | बवासीर, यकृत, श्वेत प्रदर, रक्त विकार, मासिक धर्म में अधिक रक्तस्त्राव में लाभकारी होता है। | 1–3 ग्रा. सुबह– शाम पानी के साथ/चावल के धोवन के साथ। |
| 159 | **पिप्पली चूर्ण** | पिप्पली फल | पाचक, पेट दर्द, श्वांस, खांसी आदि में लाभकारी होता है। | 1/2 ग्रा. से 1 ग्राम शहद/पानी से सुबह–शाम |
| 160 | **पुआड़ बीज (चक्रमर्द) चूर्ण** | पुआड़ बीज (चक्रमर्द) | त्वचारोग, वातरोग, कुष्ठ आदि को नष्ट करने वाला होता है। | 1 से 3 ग्राम जल एवं दूध व तैलीय पेस्ट बनाकर लगाना। |
| 161 | **पुनर्नवा मूल चूर्ण** | पुनर्नवा जड़ | शोथ, उदर रोग, कामला, पाण्डु, विषविकार, मूत्रविकार में लाभकारी होता है। | 3–6 ग्राम सुबह–शाम जल से। |
| 162 | **रास्ना पत्ती चूर्ण** | रास्ना पत्ती | ज्वर, कफ, श्वासनली की सूजन, वात रोग आदि में लाभकारी होता है। | 3 से 6 ग्राम जल के साथ सुबह शाम। |
| 163 | **सफेद मूसली चूर्ण** | सफेद मूसली कंद | पुष्टिकारक, वातरोग नाशक, शक्तिवर्धक तथा रसायन होता है। | 3–6 ग्रा. सुबह–शाम दूध से भोजन उपरान्त। |
| 164 | **सनाय पत्ती चूर्ण** | सनाय पत्ती | कब्जीयत, उदर रोग में अत्यन्त लाभकारी होता हैं। | 1–3 ग्रा. मुनक्का या जल के साथ भोजन उपरांत। |
| 165 | **सर्पगंधा चूर्ण** | सर्पगंधा मूल | उन्माद, उच्च रक्त चाप, हृदय रोग, अनिद्रा में लाभकारी होता है। | रक्तचाप के लिए 1–2 ग्रा. व निद्राजनन के लिए 3–6 ग्रा. दूध या जल के साथ। |
| 166 | **सरपोंखा चूर्ण** | सरपोंखा मूल | विषमज्वर, कफ, श्वास रोग, प्लीहा, बवासीर में प्रभावकारी होता है। | 3–5 ग्राम दिन में दो बार जल से। |
| 167 | **सौंठ चूर्ण** | सौंठ कंद | सर्दी–खांसी, आमपाचक, पेट में वायु से होने वाला दर्द, जोडों का दर्द, रक्तपित में लाभकारी। | 1/2 से 1 ग्राम दिन में दो बार जल से। |
| 168 | **शतावर चूर्ण** | शतावरी कंद | स्तन्यवर्धक, श्वेत प्रदर, शुक्र दौर्बल्य आदि में लाभकारी होता है। | 3–6 ग्रा. सुबह–शाम दूध से भोजन उपरान्त। |
| 169 | **तुलसी पत्ती चूर्ण** | तुलसी पत्ती | कफ, कास, श्वास, प्रतिश्याय, अरूचि रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है, विषमज्वर, कास रोग को नष्ट करता है। | 3–5 ग्रा. सुबह–शाम शहद से। |
| 170 | **वच चूर्ण** | वच कंद | स्वरभेद, कफ–निःसारक, पाचक, विषम ज्वर, अपस्मार में अत्यन्त लाभकारी होता है। | 500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम शहद से सुबह–शाम। |
| 171 | **वायबिडंग चूर्ण** | वायबिडंग बीज | यह उत्तम कृमिघ्न, वातहर, दीपन, पाचक, वातनाड़ी संस्थान के लिए बल्य, रक्तशोधक एवं कृमिनाशक होता है । | 5–10 ग्रा. भोजन उपरान्त शहद या मठ्ठे के साथ। |
| 172 | **विदारीकंद चूर्ण** | विदारी कंद | धातुरोग, शक्तिवर्धक, पुष्टिकारक एवं रसायन होता है। | 3 से 6 ग्राम सुबह–शाम दूध से। |
| 173 | **विधारा मूल चूर्ण** | विधारा मूल | क्षयरोग, शरीर की दुर्बलता, रसायन वातनाशक, आमवात में उपयोगी होता है। | 3 से 6 ग्राम सुबह–शाम शहद या दूध से। |

| शास्त्रोक्त यौगिक चूर्ण / लेप / क्वाथ | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 174 | **अजमोदादि चूर्ण** | अजमोद, वायबिडंग, सेंध ाानमक, देवदारू, चित्रक, पिपरामूल, सौंफ, पीपली, सौंठ, कालीमिर्च, विधारामूल, हरीतिकी एवं अन्य | आमवात, जोड़ों के शोथ, वायु रोग, पेट दर्द में लाभकारी होता है। | 3–6 ग्रा. जल से दिन में दो बार भोजन उपरान्त। |
| 175 | **अमृतादि चूर्ण** | गिलोय, सोंठ, गोखरू, गोरखमुण्डी, वरूण छाल एवं अन्य। | आमवात, ज्वर, विषमज्वर में उपयोगी एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। | 3–6 ग्रा. जल के साथ भोजन उपरान्त। |
| 176 | **अश्वगंधादि चूर्ण** | अश्वगंधा, सोंठ, पिप्पली, काली मिर्च, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेसर, भारंगी, तालीसपत्र, जटामांसी, रास्ना, कुटकी, जीवंती, नागरमोथा, शर्करा एवं अन्य | शुक्रल रसायन, शक्तिवर्धक, त्रिदोषनाशक होता है। यह नसों की मजबूती की उत्तम औषधि है। | 3–6 ग्रा. दूध से भोजन उपरान्त। |
| 177 | **अविपत्तिकर चूर्ण** | सोंठ, काली मिर्च, पिप्पली, बालहरड़, बहेड़ा, आंवला, तेजपत्र, मिश्री, वायविडंग, निशोथ एवं अन्य | अपचन, अजीर्ण, अम्लपित्त, भूख की कमी, वातानुलोमक होता है। | 3–6 ग्रा. जल से भोजन पूर्व। |
| 178 | **बालचतुर्भूज चूर्ण** | नागर मोथा, पीपली, अतीस एवं काकड़ासींगी। | अतिसार, ज्वर, श्वास–कास, बालरोग में उपयोगी। | 500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम शहद के साथ। |
| 179 | **दाड़िमाष्टक चूर्ण** | वंशलोचन, दालचीनी, तेजपत्र, इलायची, पीपलामूल, जीरा, धनिया, सौंठ, कालीमिर्च अनारदाना एवं अन्य | संग्रहणी रोग, अरूचि, अग्निप्रदीपक होता है। | 3–6 ग्रा. जल से सुबह–शाम। |
| 180 | **दशांगलेप चूर्ण** | सिरस छाल, मुलैठी , तगर, लाल चन्दन,बड़ी इलायची, जटामांसी, हल्दी, दारूहल्दी, कूठ, नेत्रबला, घी एवं अन्य। | विसर्प, दाह एवं शोथ पर लाभदायी, संधिवात में प्रभावकारी होता है। | जल के साथ पकाकर मोटा एरण्ड पत्र सहन योग्य लेपकर ऊपर से चिपका दें। |
| 181 | **दशनसंस्कार चूर्ण (दंतमंजन)** | हरड़, सोंठ, नागरमोथा, खैर, कपूर, कालीमिर्च, लौंग, एवं अन्य। | दांतों के रोग (पायरिया) में, मुख से दुर्गन्ध आना, मसूडे में सूजन एवं मसूड़ों में खून आना आदि में लाभकारी। | सुबह–शाम अथवा भोजन के पश्चात दांतों पर मंजन की तरह उपयोग करें। |
| 182 | **एरण्डभृष्ट हरितकी चूर्ण** | बाल हरड़ को एरण्ड तेल में भूनकर शोधित किया गया है। | आमवात, अर्श, कब्ज में अत्यन्त उपयोगी। पाचन शक्ति को बढ़ाता है। | 3–6 ग्रा. भोजन के बाद गुनगुने पानी से। |
| 183 | **गंगाधर चूर्ण** | नागरमोथा, सौंठ, धायफूल, पठानीलोध, नेत्रबला, बेलगिरी, पाठा, इन्द्रजौ, कुड़े की छाल, आम की गुठली एवं अन्य। | प्रवाहिका, अतिसार, ग्रहणी रोग में उपयोगी। | 3 से 5 ग्राम चावल के धोवन में शहद मिलाकर दिन में तीन बार। |
| 184 | **हरितक्यादि चूर्ण** | हरड़, पुष्करमूल, वच, रास्ना, पिप्पली, सोंठ, नरकचूर | हृदय रोग, वायु रोग, वातानुलोमक होता है। | 3–6 ग्राम सुबह–शाम उष्ण जल से । |
| 185 | **हिंग्वाष्टक चूर्ण** | सोंठ, हींग, अजमोद, जीरा, काला जीरा, पिप्पली, सेंधा नमक, काली मिर्च एवं अन्य | गैस, कब्ज, अजीर्ण, हृदय, अर्श, ग्रहणी रोग में उपयोगी एवं पाचक होता है। | 3 से 6 ग्राम भोजन के साथ सुबह–शाम। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 186 | **हिस्टीरियानाशक चूर्ण** | भुनी हींग, वच, जटामांसी, कूठ, कालानमक, वायविडंग एवं अन्य। | इस चूर्ण को धैर्यपूर्वक 2 माह तक सेवन करने से हिस्टीरिया रोग दूर करने में सहायक होता है। उदर वात, कृमि, निद्रा न आना आदि विकार नष्ट हो जाते है। | 3 से 6 ग्राम सुबह–शाम दूध या जल से। |
| 187 | **लवण भास्कर चूर्ण** | पंच लवण, धनिया, पिप्पली, पीपरामूल, काला जीरा, नागकेसर, सोंठ, तालिसपत्र, दालचीनी, अनारदाना, अम्लवेत, कालीमिर्च एवं अन्य | अरूचि, पाचन, अजीर्ण, कब्ज, खट्टी डकार में अत्यन्त लाभकारी होता है। | 3 से 6 ग्राम भोजन उपरांत पानी से। |
| 188 | **महासुदर्शन चूर्ण** | रास्ना, धमासा, खरैटी, एरंडमूल, नरकचूर, वच, अडूसा, सोंठ, चव्य, नागरमोथा, पुनर्नवा, गिलोय, हरड़, बहेड़ा, दारूहल्दी अन्य औषधियां । | समस्त प्रकार के ज्वर, मलेरिया में अत्यन्त लाभकारी होता है। | 3 से 6 ग्राम भोजन उपरांत दूध से। |
| 189 | **मंजिष्ठादि चूर्ण** | मंजिष्ठा, माजूफल, कलमी–मिश्री, बालहरड़, गुलाब पंखुडी, निशोथ सनाय पत्ती एवं अन्य | कुष्ठ, उदर विकार एवं रक्त में बढ़े हुए विषैले तत्वों को नष्ट करता है, एवं वर्ण्यकर होता है। | 3 से 6 ग्राम जल से दिन में दो बारं। |
| 190 | **मूत्रविरेचन चूर्ण** | शीतल चीनी, रेवत चीनी, छोटी इलायची, जीरा, कलमीशोरा, मिश्री | मूत्र मार्ग को साफ करता है, मूत्रल, शोथहर, अश्मरी, अष्टीला में उपयोगी होता है। | 3 से 6 ग्राम दूध या जल के साथ सुबह–शाम। |
| 191 | **निम्बादि चूर्ण** | नीम छाल, गिलोय, हरीतिकी, आंवला, बावची, सोंठ, वच, वायविडंग, चक्रमर्द बीज, खैर, पिप्पली, अजवाइन, जीरा, कुटकी, हल्दी, सेंधा नमक, दारूहल्दी, देवदारू, नागरमोथा एवं अन्य। | त्वचा रोग, कुष्ठ, आमवात, डेन्ड्रफ, पिम्पल्स, रक्तपित्त रोग को नष्ट करने वाला होता है। | 3–6 ग्राम भोजन उपरांत पानी से। |
| 192 | **पंचसकार चूर्ण** | सोंठ, सौंफ, सनाय पत्ती, बालहरड़, सेंधा नमक | कब्ज, उदर रोग, अजीर्ण, अर्श, मलावरोध को दूर करने वाला होता है। | 3 से 6 ग्राम भोजन उपरांत गुनगुने पानी से। |
| 193 | **पंचकोल चूर्ण** | पिप्पली, चव्य, सोंठ, पीपरामूल, चित्रक | अरूचि, यकृत विकार, गुल्म, शूल में लाभकारी, आमपाचक, वातशामक होता है। | 3 से 6 ग्राम जल के साथ सुबह शाम। |
| 194 | **पंचनिम्बा चूर्ण** | नीम फूल, नीम पत्ती, नीम छाल, नीम फल, नीम जड़, हरड़, बहेड़ा, आंवला, सोंठ, मिर्च, पिप्पली, ब्राम्ही, गोखरू, शुद्ध भल्लातक, चित्रक, वायविडंग, वराही कंद, लौहभस्म, गिलोय, हरिद्रा, दारूहरिद्रा, बाकुची, अमलतास, शर्करा, कूठ, इन्द्रजौ, पाठा, खैर छाल, असन क्वाथ, नीम छाल | खून शुद्ध करने में, कुष्ठ, महाकुष्ठ, सफेद दाग, दाद खाज–खुजली, एग्जिमा एवं अन्य समस्त त्वचा रोगों में लाभदायक। | 3 से 6 ग्राम सुबह–शाम दूध या जल से। |
| 195 | **पुनर्नवादि चूर्ण** | पुनर्नवा, गिलोय, सोंठ, सौंफ, कचूर, गौरखमुन्डी एवं अन्य | आमाशय शोथ, वात तथा उदर रोग में लाभकारी। | 3 से 6 ग्राम कांजी या गरम जल से। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 196 | **पुष्यानुग चूर्ण** | पाठा, जामुन गुठली, आम गुठली, पाषाणभेद, रसांजन, भटकटैया, मोचरस, लज्जालू, पदम केसर, अतीस, नागरमोथा, बेल, लोध्र, गेरू, कायफल, सोंठ, काली मिर्च, द्राक्षा, रक्त चंदन, अरलू, कुट्ज, अंजनामूल, धायफूल, मुलैठी , अर्जुन, कुमकुम | रक्तार्श, अतिसार, रक्त प्रदर एवं अन्य स्त्री रोग, स्त्रियों में प्रदर रोगों की उत्तम औषधि है। | 3 से 6 ग्राम चावल के ध ोवन के साथ दिन में दो बार। |
| 197 | **सारस्वत चूर्ण** | मीठाकूठ, अश्वगंधा, सेन्धानमक, अजवाइन, जीरा, कालाजीरा, सौंठ, मरिच, पिप्पली, पाठा, शंखपुष्पी, बच एवं ब्राम्ही स्वरस। | दुर्बलता, धारणाशक्ति, धैर्य, अनिद्रा, उन्माद में उपयोगी तथा स्मरणशक्ति को बढाती जाती है। | 3 से 6 ग्राम घी, शहद के साथ सुबह–शाम। |
| 198 | **शिवाक्षार पाचन चूर्ण** | हिंग्वाष्टक, बालहरड़ (शोधित), सज्जीखार | वायु, अजीर्ण, कब्ज, अफरा, वमन, अरूचि आदि रोगों में लाभकारी। | 3 से 6 ग्राम भोजन उपरांत गुनगुने पानी से। |
| 199 | **शोधित हरीतकी चूर्ण** | हर्रा, गौ–मूत्र | विबंध, उदर रोग, उदर शूल, गृहणी, अर्श, भंगदर, कुष्ठ रोग में उपयोगी। | 3–6 ग्राम उष्ण जल से दिन में दो बार भोजन उपरान्त। |
| 200 | **सितोपलादि चूर्ण** | काल्पी मिश्री, वंशलोचन, इलायची, दालचीनी, पिप्पली | कास–श्वास, जुकाम एवं बुखार, श्वास, क्षय आदि में उपयोगी होता है। | 3 से 6 ग्राम सुबह– शाम शहद या दूध से । |
| 201 | **सुदर्शन चूर्ण** | देवदारू, वच, नागरमोथा, हरड़, कालमेघ एवं अन्य औषधियां। | समस्त प्रकार के ज्वर में लाभदायक। | 3 से 5 ग्राम भोजन उपरांत दूध या शहद से। |
| 202 | **स्वादिष्ट विरेचन चूर्ण** | ुद्ध गंधक, मुलैठी, सौंफ, सनाय, मिश्री। | मलावरोध, अर्श, खुजली, कब्ज, त्वचा रोग। | 3 से 6 ग्राम गुनगुने पानी से भोजन उपरान्त। |
| 203 | **तालिसादि चूर्ण** | तालीसपत्र, काली मिर्च, सोंठ, पिप्पली, वंशलोचन, इलायची। | वास–कास एवं बुखार में लाभदायक। | 3 से 5 ग्राम भोजन उपरांत दूध या शहद से। |
| 204 | **त्रिकटु चूर्ण** | सोंठ, मिर्च, पिप्पली | अरूचि, अग्निमाद्य एवं श्वास–कास में लाभकारी तथा भूख की कमी को दूर करता है। | 500 मि.ग्रा. से 1 ग्राम शहद या घी से। |
| 205 | **त्रिफला चूर्ण** | आंवला, हरड़, बहेड़ा | उदर रोग, नेत्र रोग, कब्ज, अर्श में उपयोगी तथा रसायन होता है। | 3 से 6 ग्राम सुबह–शाम जल के साथ |
| 206 | **वैश्वानर चूर्ण** | सेन्धा नमक, अजमोद, अजवायन, सोंठ, हरड़ | आमवात, गुल्म, हृदय रोग, प्लीहा वृद्धि, ग्रन्थि रोग, विविध प्रकार के शूल, अर्श, वातजन्य विकार में लाभदायक हैं। | 3 से 6 ग्राम गुनगुने पानी या मठ्ठा, घी या कांजी से सुबह– शाम। |
| 207 | **विडंगादि चूर्ण** | वायबिडंग, सेंधा नमक, जवाखार, बड़ी हरड़ छिलका | इस चूर्ण को मट्ठे के साथ सेवन करने से सभी प्रकार के कृमि रोग नष्ट होते हैं। | 3 से 6 ग्राम मठ्ठे के साथ भोजन उपरान्त। |
| 208 | **विजय चूर्ण** | त्रिफला, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपत्र, त्रिकटु, वच, पाठा, यवक्षार, हल्दी, दारूहल्दी, चव्य, कुटकी, इन्द्रजौ, चित्रकमूल, सौंफ, पंचलवण, पीपरामूल, बेल फल एवं अन्य | कास, शोथ, अर्श, उदर रोग में अत्यन्त उपयोगी होता है। | 3 से 6 ग्राम जल के साथ। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 209 | **विल्वादि चूर्ण** | बिल्व गिरी, नागरमोथा, छोटी इलायची, सफेद चंदन, लाल चन्दन, अजवाइन, निशोथ, चित्रक मूल, बिड लवण, पिप्पली अश्वगंधा, खरेटी जड़, वंशलोचन, शुद्ध शिलाजीत | मस्तिष्क तथा स्नायु संबंधी रोग में लाभदायक हैं, ग्रहणी, अतिसार, उदर रोग में उपयोगी। | 3 से 6 ग्राम सुबह शाम। दूध या कांजी के साथ। |
| | | शास्त्रोक्त क्वाथ चूर्ण | | |
| 210 | **दशमूल क्वाथ चूर्ण** | बेल छाल, गंभारी छाल, पाढ़लछाल, अर्लू छाल, अरणी छाल, गोखरू पंचांग, छोटी कटेली, बड़ी कटेली पंचांग, पृष्ठपर्णी एवं शालपर्णी पंचांग | यह वात प्रकोप, हृदय–अवरोध, शोथ, कफ वृद्धि, पसलियों की पीड़ा एवं गर्भाशय शोधक, आम–विषहर व शूल नाशक होता है। | 10–15 ग्राम का क्वाथ बनायें (क्वाथ बनाने के लिये इसमें एक गिलास पानी डालकर उबाला जाये। चौथाई हिस्सा बचने पर इसे छान लें।) पिप्पली के चूर्ण अथवा घी मिलाकर रोगानुसार अनुपानों के साथ लें। |
| 211 | **गोक्षुरादि क्वाथ चूर्ण** | गोखरू, एरण्डमूल, बच, रास्ना, पुनर्नवा | सन्धिवात, हाथ–पैर के दर्द एवं किडनी, अश्मरीहर, एवं वातरोगों पर लाभकारी होता है। | 5 से 10 ग्राम चूर्ण को चार गुना जल में मिलाकर क्वाथ तैयार कर दिन में दो बार सेवन करें, भोजन उपरान्त। |
| 212 | **कांचनार क्वाथ चूर्ण** | कांचनार छाल, सौंठ, वरूण छाल, शहद एवं अन्य। | गण्डमाला, गुल्म, गलगण्ड एवं शरीर में किसी भी प्रकार की ग्रंथि को ठीक करने में उपयोगी। | 5–10 ग्राम चूर्ण को चार गुना जल में मिला कर क्वाथ तैयार करें एक भाग जल बचे छांन कर दिन में दो बार सेवन करें, भोजन उपरान्त। |
| 213 | **महारास्नादि क्वाथ चूर्ण** | रास्ना, बहेड़ा, आंवला, हल्दी, दारूहल्दी, बड़ी कटेली, छोटी कटेली, नरकचूर, सौंठ, मरिच पिप्पली, पीपरामूल, गिलोय, धमासा, कुटकी, कालमेघ व अन्य | समस्त वात व्याधि, शोथ में उपयोगी होता है। | 5 से 10 ग्रा. दो कप पानी में पकाये आधा कप बचे छानकर गुनगुना पिये। |
| 214 | **पाषाणभेदादि क्वाथ चूर्ण** | पाषाणभेद, मुलैठी , अडूसा, गोखरू, एरंडमूल, अमलतास, पिप्पली, शुद्ध शिलाजीत, एला | अश्मरी, मूत्रल, मूत्राशय शोथ में उपयोगी। | 5 से 10 ग्रा. क्वाथ बनाकर शहद या मिश्री के साथ। |
| 215 | **फलत्रिकादि क्वाथ चूर्ण** | आंवला, बेहड़ा, हरड़, पटोल, कुटकी। | ज्वर, छर्दी (छींक), अम्लपित्त, कामला, पाण्डू में उपयोगी। | 5 से 10 ग्रा. क्वाथ बनाकर शहद और मिश्री के साथ। |
| 216 | **पुनर्नवाष्टक क्वाथ चूर्ण** | पुनर्नवा, निम्ब, पटोल, सौंठ, कटुका, गिलोय, देवदारू, हरीतकी। | उदर रोग, शोथ, कास, सर्वांगशोथ में उपयोगी। | 5 से 10 ग्रा. क्वाथ बनाकर । |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 217 | **रास्नासप्तक क्वाथ चूर्ण** | रास्ना, गुडुची, अमलतास, देवदारू, गोखरू, एरण्डमूल, पुनर्नवा। | शोथहर, शरीर के जोड़ों, हाथ–पैर दर्द एवं विभिन्न प्रकार के शारीरिक दर्द एवं वातरोगों पर अत्यन्त लाभकारी औषधि होती हैं | 5–10 ग्राम चूर्ण को चार गुना जल में मिलाकर क्वाथ तैयार कर दिन में दो बार सेवन करें, भोजन उपरान्त। |
| 218 | **त्रिफला क्वाथ चूर्ण** | आंवला, हरड़, बहेड़ा। | नेत्र रोग, मुख रोग, कामला में उपयोगी। | 5 से 10 ग्रा. क्वाथ बनाकर। |
| 219 | **वरूणादि क्वाथ चूर्ण** | वरूण, सौंठ, गोखरू एवं अन्य। | अश्मरी एवं वात–व्याधि आदि रोगों को नष्ट करता है। | 5 से 10 ग्रा. क्वाथ बनाकर यवक्षार के साथ। |
| | | शास्त्रोक्त आयुर्वेदिक तेल | | |
| 218 | **अरण्ड तेल** | अरण्ड बीज | विबंध, अर्श, उदर रोग, वातविकार, त्वचा रोग में उपयेागी। | दिन में दो बार तेल से मालिश एवं पनार्थ गुनगुने दूध या पानी से 5–25 मि. ली. सेवन करें। |
| 219 | **अश्वगंधा तेल** | अश्वगंधा, तिल तेल एवं अन्य। | शक्तिवर्धक, वात रोग, यौन रोग में उपयोगी। | दिन में दो बार तेल से मालिश। |
| 220 | **बला तेल** | बला, गुडूची, रास्ना, दंतीमूल, देवदारू, इलायची, तिल तेल, त्रिजात, कपूर, कूठ, जटामांसी, प्रियंगु, तगर, वच एवं अन्य। | वात–व्याधि, छर्दी, कास–श्वास, ज्वर, मूर्छा में उपयोगी। | अभ्यंग एवं 3 से 6 मि.ली. पनार्थ दूध के साथ। |
| 221 | **भृंगराज तेल** | तिल तेल, भृंगराज स्वरस, मंजिष्ठ, रक्त चंदन, बला, हरिद्रा, मुलैठी एवं अन्य औषधियां। | यह केशों के खालित्य एवं पालित्य रोगों में, शिरोः रोग, कर्ण रोग में काम आता है, केश मुलायम व सघन होते है तथा रूसी समाप्त हो जाता है । बाल सुन्दर होते हैं। | सिर में प्रतिदिन या एक दिन छोड़कर लगाकर मालिश। |
| 222 | **ब्रहत्सैंधवादि तेल** | सेंधा नमक, गजपिप्पली, रास्ना, सौंफ, यवानी, त्रिकटु, बिड नमक, मुलेठी, वच, अजमोद, पुष्करमूल, एरण्ड तेल एवं अन्य। | आमवात, अर्दित, सन्धि वात, कटिशूल, उरूशूल, जानुशूल में लाभकारी। | प्रतिदिन सुबह–शाम मालिश करें। |
| 223 | **चक्रमर्द तेल** | चक्रमर्द बीज, मालकांगनी, नारियल एवं अन्य औषधियां। | यह तेल हल्का गुनगुना कर मालिश करने से कमर, जांघ, पींडली आदि अंग का दर्द नष्ट हो जाता है एवं चर्मरोग पर लाभदायक। | प्रतिदिन 2 से 3 बार मालिश करें। |
| 224 | **चंदनबलालाक्षादि तेल** | रक्त चन्दन, बला जड़, लाख, तिल तेल, सफेद चन्दन खस एवं अन्य औषधियां। | इस तेल की मालिश करने से कास, श्वास, क्षय, वमन, ज्वर, कामला, रक्त प्रदर, रक्त पित्त, कफ के प्रकोप आदि दूर होते हैं तथा शरीर बलवान बनता है। | आवश्यकतानुसार मालिश करें चिकित्सक के परामर्शानुसार। |
| 225 | **जात्यादि तेल** | चमेली पत्र, नीमपत्र, तिल तेल एवं अन्य | घाव, फोड़े, फुंसी, त्वचा रोग, यौन रोग में अत्यन्त लाभकारी। | बाहरी उपयोग हेतु प्रभावी अंग में दो से तीन बार प्रतिदिन। |
| 226 | **करंज तेल** | करंज बीज का तेल | खुजली के लिये यह बहुत उपयोगी है। यह ददु, पामा, विसर्प, सर की खुजली आदि त्वचा के रोगों में एवं संधिवात में लाभदायक है। | प्रभावी अंग में दिन में दो से तीन बार लगावें। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 227 | **कासिसादि तेल** | कसीस, पिप्पली एवं अन्य | अर्श में लाभप्रद। | तेल को प्रभावित जगह पर लगाना है, दो से तीन बार। |
| 228 | **महामारिच्यादि तेल** | सरसो तेल, गौ–मूत्र, जटामांसी, श्वेत चन्दन एवं अन्य औषधियां। | कुष्ठ, सूजन, शरीर में चक्कते निकलना और व्रण रोगों में लाभदायक। | प्रभावी अंग में दो से तीन बार लगावें। |
| 229 | **महामाष तेल** | उड़द, दशमूल, गौ दूध, अश्वगंधा, कचूर,तिल तेल, बला जड़, अष्टवर्ग एवं अन्य औषधियां। | यह पक्षाघात, हाथ पैर कांपना, लगड़ापन में लाभकारी है, वात रोग में उपयोगी। | प्रभावी अंग में दिन में दो से तीन बार लगावें। |
| 230 | **महानारायण तेल** | शतावरी, दशमूल, बेल, अश्वगंधा, नीम, तिल तेल एवं गंधकी एवं अन्य औषधियां। | समस्त जोड़ों के दर्द, पक्षाघात, वात रोग, व्रणरोपक में अत्यन्त लाभकारी। | दिन में दो बार तेल से मालिश। |
| 231 | **महाविषगर्भ तेल** | धतूरा, कनेर, आक, निर्गुण्डी, शोधित तिल तेल एवं अन्य औषधियां। | समस्त प्रकार के वात रोग, शोथ, साइटिका, जोड़ों के दर्द में उपयोगी। | दिन में दो बार तेल से मालिश। |
| 232 | **नीम तेल** | नीम बीज तेल | वातहर, त्वचा रोग में उपयोगी। | दिन में दो बार तेल से मालिश। |
| 233 | **निम्बादि तेल** | निम्बोली का तेल, हरताल एवं अन्य | भगंदर एवं घाव भरने में लाभकारी। | रूई से तेल को लगाना है। |
| 234 | **निर्गुण्डी तेल** | निर्गुण्डी पंचांग एवं पत्र का स्वरस, तिल तेल। | वात रोग, जोड़ो में दर्द में उपयोगी। | दिन में दो बार तेल से मालिश। |
| 235 | **पिण्ड तेल** | मोम, मंजिष्ठा, सर्ज रस, सारिवा, तिल तेल एवं अन्य। | वातरक्त, दाह में उपयोगी। | अभ्यंग। |
| 236 | **प्रसारणी तेल** | प्रसारणी, तिल का तेल, गाय का दूध, कांजी, मुलैठी, पिपलामूल, चित्रकमूल, सेंधा नमक, देवदारू, रास्ना, गजपीपली, भिलावा, बच, सौंफ, जटामांसी, रक्त चंदन एवं अन्य। | हड्डी के अस्थिभग्न एवं च्युत, शरीर के कमजोर अंगों को बल देता है। | प्रभावित स्थान पर दिन में दो से तीन बार तेल से मालिश। |
| 237 | **षडबिन्दु तेल** | एरंडमूल, तगर, जीवंती, रास्ना, सेंधा नमक, वायविडंग, मुलैठी , सौंठ, काला तिल तेल, बकरी का दूध। | नाक व दांत संबंधी उर्द्धजात्रुगत रोगों में लाभदायक होता है। | 4 से 6 बूंद नाक में डालें। |
| 238 | **श्रीपर्णी तेल** | गंभारी छाल का क्वाथ, तिल तेल। | स्तन पुष्टिकारक होता है। | दिन में दो से तीन बार तेल से मालिश। |
| 239 | **सोमराजी तेल** | बाकुची, हरिद्रा, सरसो, दारू हल्दी, कूट, करंज बीज एवं अन्य। | श्वेत कुष्ठ, कृमि, त्वचा रोग, दाद में उपयोगी। | बाहरी उपयोग हेतु । दिन में दो बार उपयोग के बाद हल्की धूप देकर। |
| 240 | **अणु तेल** | जीवंती, हऊबेर, देवदारू, नागरमोथा, दालचीनी, खस, सारीवा, श्वेत चंदन, एवं अन्य औषधियां | ऊर्ध्वजात्रुगत रोग, पालित्य, स्कंध, ग्रीवास्तंभ, वक्षस्तंभ, | 5–10 बूंद नाक में डाले |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 241 | **धनवंत्र तेल** | बलामूल, दशमूल, गाय दूध, तिलतेल एवं अन्य औषधियां | वातरोग, पक्षाघात, सर्वांगवात, धातुक्षय, सूतिका रोग, एवं बालरोग, | 10–60 बूंद गुनगुने दूध अथवा पानी के साथ। बाहरी उपयोग हेतु दिन में दो बार हल्के हाथ से मा िकरें। |
| | | शास्त्रोक्त विन्ध्य आसव एवं आरिष्ट | | |
| 242 | **अभ्यारिष्ट** | हरड़, मुनक्का, वायबिडंग, महुआ फूल, गुड़, गोखरू, निशोथ, धनिया, धायफूल, इन्द्रायणी जड़, चव्य, सौंफ, सौंठ, दन्तीमूल एवं अन्य। | अर्श, उदर रोग, मलावरोध, मूत्रावरोध, को दूर करता है, अग्नि को प्रदीप्त करता है यह उत्तम सारक मूत्रल और पाचक है। कोष्ठबद्धता पर अत्यंत उपयोगी है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 243 | **अमृतारिष्ट** | गिलोय, दशमूल, जीरा, पित्तपापड़ा, सौंठ, काली मिर्च, पिप्पली, नागरमोथा, कुटकी, अतीस, इन्द्र जौ एवं अन्य। | यह जीर्ण ज्वर, पुराना ज्वर, विषम ज्वर एवं निर्बलता को दूर करता है, प्रमेह, मूत्र दोष, त्वचा रोग उदर शूल, प्लीहावृद्धि, कामला में लाभदायक है, यकृत को मजबूत करता है, रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है । | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार भोजन उपरान्त। |
| 244 | **अर्जुनारिष्ट** | अर्जुन छाल, द्राक्षा, धायफूल, शहद एवं अन्य। | हृद्यरोग, फुफ्फुस रोग, बलक्षय, वीर्यक्षय में लाभदायक। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार भोजन उपरान्त। |
| 245 | **अरविन्दासव** | सफेद कमल फूल, खस जड़, गम्भारी, नील कमल, मंजीष्ठ, इलायची, बला जड़, जटामांसी, नागरमोथा, श्वेत अन्तमूल, हरड़, बहेड़ा, बच, आंवला, कचूर एवं अन्य। | यह आसव बालकों के अनेक रोगों को नष्ट करता है एवं पुष्ट बनाता है। खांसी, अपचन, पतले दस्त, उदर रोग में लाभदायक है। | चिकित्सक के परामर्श अनुसार। |
| 246 | **अशोकारिष्ट** | अशोक छाल, धाय फूल, श्वेत जीरा, नागरमोथा, सौंठ, दारू हल्दी, कमल फूल, हरड़, बहेड़ा, आंवला, काला जीरा एवं अन्य। | यह स्त्रियों के रक्त प्रदर, मंद ज्वर, रक्त पित्त, अर्श, अग्निमाद्य, अरूचि आदि विकारों को दूर करता है, गर्भाशय को बल्य प्रदाय करता है एवं इसके विकार दूर करता है, कमर दर्द, सर दर्द, मासिक धर्म के समय दर्द में काफी आराम होता है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 247 | **अश्वगंधारिष्ट** | अश्वगंधा, सफेद मूसली, मंजीष्ठ, हरड़, दारूहल्दी, मुलैठी , रास्ना, बिदारी कन्द, अर्जुन छाल, नागरमोथा, निशोथ एवं अन्य। | यह दीपन पाचन, वातनाशक, प्रमेह, बवासीर, मस्तिष्क निर्बलता, वात व्याधियों में लाभकारी है, यह स्फूर्तिदायक, वीर्य की शुद्धि एवं वीर्य की वृद्धि करता है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 248 | **बबुलारिष्ट** | बबूल छाल, पीप्पली, जायफल, कंकोल, इलायची, दालचीनी, तेजपत्र, नागकेशर, लौंग, कालीमिर्च एवं अन्य। | क्षय, त्वचा रोग, कुष्ठ, अतिसार, श्वास–कास। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 249 | **बलारिष्ट** | बला (खरेंटी), धायफूल, क्षीरकाकोली, एरण्डमूल, रास्ना, बड़ी इलायची, लौंग, गोखरू एवं अन्य। | यह उत्तम वातनाशक, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक और जठराग्नि प्रदीपक है। इसके सेवन से समस्त प्रकार के कठिन से कठिन वातव्याधि रोग नष्ट होते हैं और कास–श्वास, राजयक्ष्मा, प्रमेह तथा बलक्षय में भी लाभकारी है। यह स्नायुमण्डल को भी पुष्ट करता है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 250 | **भृंगराजासव** | भृंगराज स्वरस, गुड़, हरड़, पिप्पली, जायफल, लौंग, इलायची, तेजपत्र, दालचीनी, नागकेशर एवं अन्य। | धातुक्षय और कास को दूर करता है यह बलकारक, वाजीकारक होता है, पेट साफ करता है, पित्तविकार, वमन, ज्वर का बार–बार आना, सिर दर्द कमर दर्द, हृदय कमजोरी, यकृत वृद्धि, प्लीहा वृद्धि बालों का टुटना आदि में लाभकारी है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 251 | **चन्दनासव** | सफेद चंदन लकडी, नागरमोथा, नेत्रबला, गंभारीमूल, नीलकमल, प्रियंशु फूल, पदमख, लोध्र, मंजिष्ट, पाठा, चिरायता, बरगदछाल, आमछाल, मोचरस, रक्त चंदन, धवई फूल, मुनक्का, शक्कर एवं अन्य। | बलकारक, शुक्रमेहनाशक, पथरी, मूत्रतंत्र विकार, मूत्र में जलन में उपयोगी। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 252 | **चविकासव** | चव्य, चित्रकमूल, डीकामाली, पुष्करमूल, वचा, कचूर, हरीतिकी, बहेड़ा, आंवला, अजवाईन, धनिया, दंतीमूल, परवल जड़, वायविडंग, नागरमोथा, मंजिष्ठ, नागकेशर, पिप्पली, कालीमिर्च, दालचीनी, शीतल चीनी, तेजपत्र, धायफूल एवं अन्य। | आंत, अमाशय संबंधी विकार ग्रहणी, आमपाचक में उपयोगी। | 12 से 24 मि.ली. दो–दो चम्मच बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 253 | **चित्तचंदिरासव** | नागरमोथा, काली मिर्च, चव्य, चित्रकमूल, हल्दी, वायविडंग, आंवला, लोध्र, पटराज, कुटकी, सफेद चंदन, तगर, जटामांसी, दालचीनी, गोदंती, लौंग, नागकेशर एवं अन्य। | पुराना अस्थमा, कफ, मूत्र विकार, कब्जनाशक, मंदाग्नि, प्रमेह में उपयोगी। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 254 | **दशमूलारिष्ट** | बेलछाल, गंभारी छाल, पाढ़ल छाल, अरलु छाल, अरणी छाल, गोखरू पंचांग, छोटी कटेली पंचांग, बड़ी कटेली पंचांग, पृष्ठापर्णी पंचांग, शालपर्णी पंचांग, चित्रकमूल एवं अन्य। | संग्रहणी, अतिसार, पेचिश, स्त्रीरोग, प्रसूतिरोग, गर्भाशय की अशुद्धि, श्वेत प्रदर आदि रोगों को दूर करता है। यह प्रवाहिका, प्रधान, संग्रहणी के विकार में अतिउपयोगी है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 255 | **द्राक्षारिष्ट** | मुनक्का, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेशर, प्रियंगु, कालीमिर्च, पिप्पली, वायविडंग, चित्रकमूल, शीतलचीनी, लौंग, धायफूल, बबूल छाल एवं अन्य। | कास–श्वास, क्षय, गले के रोगों को नष्ट करता है, शरीर का बल बढ़ाता है, मल का शोधन करता है, पेट साफ रखता है, पाचन शक्ति बढ़ती है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। |
| 256 | **द्राक्षासव** | द्राक्षा, शहद, धायफूल, जायफल, लौंग, कंकोल, श्वेत चन्दन, पिप्पली, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, चित्रकमूल, चव्य, पीपरामूल, निर्गुण्डी बीज, नाग केशर, शीतलमिर्च एवं अन्य। | द्राक्षासव गृहणी, अर्श, रक्त गुल्म, उदर रोग, कृमि, नेत्र रोग, पाण्डु, कामला को नष्ट करता है, निर्बलता को दूर करता है, शरीर में उत्साह बढ़ाता है, मल भी शुद्ध होता है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 257 | **कालमेघासव** | कालमेघ, गिलोय, सप्तपर्ण, कुटकी, करंज पंचांग, कुटज, धायफूल, सौंठ, काली मिर्च, दालचीनी, बबूल छाल, सरपोंखा मूल, घृतकुमारी रस, व अन्य। | सभी प्रकार के विषमज्वर, मलेरिया, टायफायड, पीलिया में अत्यन्त उपयोगी। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 258 | **कनकासव** | अडूसा जड़, धतूरा पंचांग, मुलैठी , सौंठ, भारंगी, तालिसपत्र, लोंग, पिप्पली, कटेली, नागकेसर, बीज रहित अंगूर, शक्कर, शहद एवं अन्य। | सांस लेने में तकलीफ, अस्थमा, सूखी खांसी, विषम ज्वर, रक्तपित्त विकार में अत्यन्त उपयोगी। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 259 | **खदिरारिष्ट** | खैर, देवदारू, बाकुची, दारूहल्दी, हरड़, बहेड़ा, आंवला, शहद, मिश्री, धायफूल, शीतलमिर्च, नागकेशर, जायफल, लौंग, इलायची, दालचीनी, तेजपत्र, पिप्पली एवं अन्य। | कुष्ठ, पाण्डु, हृदय रोग, कृमि, श्वास, रक्त विकार, प्लीहावृद्धि, गुल्म आदि विकार समाप्त होते हैं । यह उत्तम रक्त शोधक है इसका प्रभाव रक्त, त्वचा एवं आंत्र पर होता है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 260 | **कुमारीआसव–बी** | कुमारी रस (पत्ती), हरीतकी, शहद, धायफूल, जायफल, घृत कुमारी स्वरस, लौंग, कबाबचीनी, जटामांसी, चव्य, चित्रकमूल, जावित्री, काकड़ासिंगी, बहेड़ा, पुष्करमूल, ताम्रभस्म, लौह भस्म एवं अन्य। | यह आसव स्त्रियों के दोष, ऋतु दोष, गुल्म, प्लीहा, खांसी, श्वास, उदर रोग, क्षय, वात रोग, उदरशूल आदि मिटते हैं, पाचन शक्ति बढ़ती है, मूत्रल, बल्य, शोथ, दाहनाशक होता है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 261 | **कुटजारिष्ट** | कुड़े की छाल, द्राक्षा, महुआफूल, गम्भारी छाल, धायफूल एवं अन्य। | संग्रहणी, अतिसार, पेचिश, मंदाग्नि, ज्वर, आदि रोगों को दूर करता है। यह प्रवाहिका, प्रधान, संग्रहणी के विकार में अतिउपयोगी है, बार–बार कम मल आना, रक्त गिरना, पेट में मरोड़ आना में यह अत्यंत लाभकारी है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 262 | **जीरकारिष्ट** | स्वेत जीरा, जातिफल, सौंठ, नागरमोथा, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, यवानी, कंकोल, लौंग, गुड़, धवईफूल एवं अन्य। | शुक्रमेह, मूत्राघात, हृदय रोग, कमजोरी, सूतिकारोग, अरूचि, उदररोग। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 263 | **लोध्रासव** | लोध्र, मूर्वा, कपूरकचरी, वायबिडंग, भारंगी, तगर, नागरमोथा, अतिविषा, चतुर्जात, त्रिफला एवं अन्य। | प्रमेह, अरूचि, ग्रहणी, गर्भाशयशोथ, अर्श, कुष्ठ, कृमि एवं पाण्डु में लाभकारी। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 264 | **लोहासव** | लौह भस्म, सौंठ, मिर्च, पिप्पली, हरड़, बहेड़ा, आंवला, अजवाइन, वायबिडंग, नागरमोथा, चित्रक जड़, धायफूल, शहद एवं अन्य। | पाचकाग्नि को प्रदीप्त करता है, पाण्डु, शोथ, गुल्म, उदर रोग, प्लीहा वृद्धि, जीर्ण ज्वर, कास–श्वास, अरूचि और हृदय रोग को नष्ट करता है । | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 265 | **पत्रांगासव** | पतंग, खैरसार, सेमल के फूल, खरेटी, शुद्ध भिलावा, सारिवा, गुड़हल, आम की गुठली, चिरायता, सफेद जीरा, लौह भस्म, दालचीनी एवं अन्य। | श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर, कष्टार्तव, ज्वर, पाण्डु, सूजन, अरूचि, अग्निमांद्य, गर्भाशय आदि रोगों में उपयोगी। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 266 | **पिप्पलाद्यासव** | पिप्पली, कालीमिर्च, चव्य, चित्रक, वायबिडंग, उशीर, चंदन, कुष्ठ, तगर, लौंग, जटामांसी, त्रिजात एवं अन्य। | ग्रहणी, गुल्म, क्षय, अर्श, पाण्डु एवं ज्वर आदि रोगों में उपयोगी। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 267 | **पुनर्नवासव** | सोंठ, कालीमिर्च, पिप्पली, हरीतकी, बहेड़ा, आंवला, दारूहल्दी, गोखरू, छोटी इलायची, बड़ी कटेली, अडूसा पत्ती, एरण्ड की जड़, कुटकी, गजपीपल, पुनर्नवा, नीम अनार छाल, गिलोय एवं अन्य। | उदर रोग, शोथ, प्लीहा वृद्धि, यकृत वृद्धि, गुल्म, ज्वर आदि रोगों को दूर करता है, इनमें से किसी भी विकार में शोथ (सूजन) आने पर उसे दूर करता है, हृदय को सबल बनाता है, लीवर, किडनी की क्षमता बढ़ाता है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 268 | **रोहितकारिष्ट** | रोहितक, पिप्पली, चव्य, चित्रक, सौंठ, त्रिफला, इलायची एवं अन्य। | प्लीहावृद्धि, ग्रहणी, उदर रोग, गुल्म, अर्श, कामला, कुष्ठ एवं शोथ रोगों में लाभकारी। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 269 | **सारस्वतारिष्ट** | ब्राम्ही पंचांग, सतावर, बिदारी कंद, हरड़, अदरक, नेत्रवाला, सौंफ, शहद, कालीमिर्च, धायफूल, रेणुक बीज, पिप्पली, वच, असगन्ध, गिलोय, वायबिडंग, निशोथ, लौंग, कूट, बहेड़ा, इलायची, दालचीनी, एवं अन्य । | मेधावृद्धि और कांति को बढ़ाता है, वाणी को शुद्ध करता है यह उत्तम हृदय रसायन है, बालक, युवा, वृद्ध सभी के लिए हितकारी है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 270 | **सारिवाद्यासव** | सारिवा, नागरमोथा, लोध्र, पिप्पली, पाठा, गुडूची, श्वेत चंदन, रक्त चंदन, कुटकी, तेजपत्र, कूठ, स्वर्णपत्री एवं अन्य। | उत्तम रक्तशोधक है, रक्तविकार, प्रमेह, उपदंश, भगंदर, अग्निमांद्य में उपयोगी। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 271 | **त्रिफलारिष्ट** | हरड़, बहेडा, आंवला, पिप्पली, चित्रकमूल, अजवायन, वायबिडंग, लौह भस्म एवं अन्य। | इस आसव से रक्त की वृद्धि होती है, हृदय रोग, घबराहट, फेफड़े की कमजोरी, पाण्डु शोथ, अर्श, प्रमेह, संग्रहणी आदि रोगों में काम आता है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 272 | **उशीरासव** | खस, हाउबेर, कमल, प्रियंगु, पठानी लोध्र, मंजिष्ठा, कपूरकचरी, मुनक्का, पटोल, पाठा एवं अन्य। | यह प्रकृति में शीत होता है, रक्त पित्त, पाण्डु, प्रमेह, कुष्ठ, कृमि एवं शोथ व सभी पित्तज विकारों में उपयोगी है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 273 | **वरूणासव** | वरूणछाल, शीशमछाल, पोखरमूल, चित्रकमूल, सहजनछाल, दशमूल, देवदारू, कटेली, दाभजड, बलछड, बड़ी कटेरी, खिरनी, शतावर, गम्भारी छाल, अर्जुन छाल, गजपीपल, खरेटी, काकड़ासिंगी, सोवा, कचूर व अन्य । | मूत्रतंत्र विकार, पथरी, कफ, बबासीर, गर्भाशय विकारों में उपयोगी है। वृक्क की पथरी निकालने में लाभकारी है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 274 | **वासकासव** | वासा, धातकी, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, कंकोल, सोंठ, कालीमिर्च, पिप्पली, नागकेशर, हउबेर, एवं अन्य। | कास, रक्तपित्त, क्षय, शोथ एवं श्वास, श्वसन तंत्र संबंधी सभी संक्रमण में लाभकारी है। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| 275 | **विडंगारिष्ट** | वायवडंग, पिप्पली, रास्ना, कुडा छाल, इन्द्र जौ, पाठा, एलुआ, आंवला, धायफूल, शहद, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, कचनार छाल, मिर्च, पिप्पली एवं अन्य । | यह कृमिनाशक दीपन पाचन, ग्राही, कीटाणु नाशक एवं आंत्रशोधक है पाचन क्रिया बढ़ाता है, उदर कृमि भी नष्ट होते हैं। | 12 से 24 मि.ली. बराबर मात्रा में जल मिलाकर दिन में दो बार। भोजन उपरान्त। |
| | | शास्त्रोक्त वटी / गुटिका | | |
| 276 | **अरोग्यवर्द्धिनी वटी** | शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, लौह भस्म, अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, त्रिफला, शुद्ध शिलाजीत, शुद्ध गुग्गुलु, चित्रक छाल, कुटकी, नीम पत्ती एवं अन्य। | उत्तम पाचन, दीपन, शोधन करनेवाला, हृदय बल्य वर्धक, मल शुद्धिकारक, त्वचारोग, यकृत–प्लीहा, वृक्क, गर्भाशय, आन्त्र आदि के शोथ में, जीर्ण ज्वर, जलोदर और पाण्डु रोग में लाभदायक। | 2–4 गोली रोगानुसार जल या दूध से। |
| 277 | **अग्नितुण्डी वटी** | ,शुद्ध पारा, शुद्ध वत्सनाभ, शुद्ध गंधक, अजवाइन, हरड, बहेडा, आवंला, चित्रकमूल, सेंधानमक, सफेद जीरा, सोचल नमक, वायविडंग, समुद्री नमक,शुद्ध सुहागा व अन्य। | मंदाग्नि, अफरा, शूल, आमातिसार, अजीर्ण, निर्बलता, आमवात, वातरोगों में उपयोगी। | 1–2 गोली प्रति दिन भोजन के बाद। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 278 | **एलादि गुटिका** | बडी इलायची, मुलैठी , तेजपत्र, दालचीनी, छुआरा, मिश्री, शहद एवं अन्य। | सूखी खांसी, क्षय की खांसी, रक्त–पित्त, मुंह से खून गिरना, ज्वर, वमन, मूर्च्छा, प्यास, जी घबराना, स्वरभेद और पित्त के विकारों में बहुत लाभदायक है एवं यह पित्तशामक और कफदोष दूर करने वाली है। | 1–1 गोली जल/दूध से लें या 3–4 गोली प्रतिदिन चूसें। |
| 279 | **चन्द्रप्रभा वटी** | कपूर, बच, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय, देवदारू, हल्दी, अतीस, दारू हल्दी, पीपरामूल, चित्रक, धनिया, त्रिफला, चव्य, वायविडंग, गजपीपल, सौंठ, काली मिर्च, स्वर्णमाक्षिक भस्म, सज्जीक्षार, जवाखार, सेंधा नमक, काला नमक, काला निशोथ, दंतीमूल, तेजपत्र, दालचीनी, वंशलोचन, लौह भस्म एवं अन्य। | मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, स्त्रियों के गर्भाशय विकार, पुरूषों में धातु संबधी विकार व मूत्रवह संस्थान की सफाई करने में सहायक है। | 2–4 गोली दिन में दो से तीन बार जल के साथ। |
| 280 | **चित्रकादि वटी** | चित्रक छाल, पीपलामूल, जवाखार, सज्जीखार, सोंचर नमक, बिड नमक, काला नमक, सेंधा नमक, सांभर नमक, त्रिकटु, अजमोद, चव्य, शुद्ध हींग, नींबू एवं अन्य। | आम दोषनाशक, अग्निप्रदीपक, आंव, पेचिश एवं मरोड में अत्यन्त लाभकारी। | 2–4 गोली दिन में तीन बार जल के साथ। |
| 281 | **गंधक वटी** | शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, सौंठ, मरिच, लौंग, सेंधा नमक, सौवर्चल नमक, मुलिका क्षार, नींबू रस एवं अन्य। | अग्निमंद, अजीर्ण, पाचन शक्ति को ठीक करने में सहायक एवं भूख ना लगना आदि में लाभकारी। | 1–2 गोली दिन में दो बार उष्ण जल के साथ। |
| 282 | **हिंग्वादि वटी** | शुद्ध हींग, अम्लवेत, सोंठ, काली मिर्च, पिपरामूल, अजवाइन, सेंधा नमक, काला नमक, समुद्र नमक एवं अन्य। | अग्निमांद्य, अरूचि, अपच आदि में लाभकारी व पाचन क्रिया को ठीक करती है। | 2–4 गोली दिन में दो से तीन बार जल के साथ। |
| 283 | **कांकायन वटी (अर्श)** | हरीतिकी, काली मिर्च, जीरा, बडी इलायची, पीपरामूल, चव्य, चित्रकमूल, सोंठ, शुद्ध भिलावा, जिमीकंद, यवक्षार एवं अन्य | खूनी बबासीर, पीलिया, पेट दर्द, भूख में कमी, अपच आदि रोगों को ठीक करता है। | 2–4 गोली दिन में दो बार मट्ठा के साथ। |
| 284 | **खदिरादि वटी** | कत्था, जावित्री, कपूर, कंकोल व अन्य | मुंह में छाले पड़ने और पक जाने पर इस बटी को मुंह में रख कर धीरे–धीरे चूसना चाहिए। स्वर भंग में भी इसके चूसने से लाभ होता है, कफ पिघल कर निकल जाता है एवं कास–श्वास रोग में उपयोगी। | 1–1 गोली मुंह में रखकर बार–बार चूंसें। |
| 285 | **कुटजघन वटी** | कूडा जड़/छाल, अतीस एवं अन्य। | अतिसार, ग्रहणी, अमीबिओसिस, पेचिश एवं ज्वर में जब पतले दस्त हो तो इसका उपयोग लाभदायी। | 2–4 गोली दिन में 3–4 बार ठंडे जल के साथ। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 286 | **लहशुनादि वटी** | लहसुन, जीरा, शुद्ध हींग, सोंठ, पिप्पली, काली मिर्च, शुद्ध गंधक, सेंधा नमक, नींबू स्वरस एवं अन्य। | यह पेट में वायु भर जाने की उत्तम दवा है। इसके सेवन से मंदाग्नि, उदर वायु, पेट दर्द दूर होता है या बार–बार चूसें और यह दीपन–पाचक तथा वायुनाशक है। | 2–4 गोली दिन में 3 बार जल से अथवा मट्ठे से। |
| 287 | **लवंगादि वटी** | मरिच, लौंग, विभीतकी, बबूल एवं अन्य। | कास, श्वास एवं श्वसन संबंधी रोगों में लाभकारी। | 1–2 गोली दिन में दो बार उष्ण जल के साथ। |
| 288 | **प्रभाकर वटी** | स्वर्णमाक्षिक भस्म, लौह भस्म, अभ्रक भस्म, शुद्ध शिलाजीत, अर्जुन छाल एवं अन्य । | हृदय, फेफडों को बल मिलता है, हृदय की अनियमित गति, सांस फूलना, रक्त की कमी तथा यकृत वृद्धिजन्य रोगों में लाभदायक। | 1–2 गोली शहद के साथ दिन में दो बार अर्जुन क्वाथ से। |
| 289 | **रजःप्रवर्तिनी वटी** | कन्या सार, शुद्ध कसीस, हिंगु, शुद्ध टंकण एवं अन्य। | रजोरोध, कष्टार्तव, आर्तव वेदना में लाभकारी। | 1–2 गोली दिन में दो बार उष्ण जल के साथ या कुलत्थ क्वाथ, तिल क्वाथ के साथ। |
| 290 | **संजीवनी वटी (विशेष)** | वायबिडंग, सोंठ, पिप्पली, त्रिफला, वचा, गिलोय, शुद्ध भिलावा, शुद्ध वत्सनाभ, शुद्ध हिंगुल एवं अन्य। | ज्वर, अपच, कृमि, पेटदर्द, अतिसार, सन्नीपात ज्वर, अजीर्ण, विसूचिका, सर्पविष में लाभकारी। | 2–3 गोली दिन में दो बार अदरक स्वरस या जल के साथ। |
| 291 | **संशमनी वटी** | गिलोय एवं अन्य। | जीर्ण ज्वर, ज्वर, विषम ज्वर, राजयक्ष्मा, पाण्डू एवं सभी प्रकार के ज्वर में लाभकारी। | 2–4 गोली दिन में दो बार पानी के साथ। |
| 292 | **शंख वटी** | इमली क्षार, पंच लवण, नींबू स्वरस, शोधित शंखभस्म, शोधित हिंगुल, शुद्ध पारा, शुद्ध वत्सनाभ, शोधित गंधक व पिप्पली एवं अन्य। | उदर विकार, ग्रहणी, शूल, पेटदर्द, डायरिया, तिल्ली संबंधी विकार, पेट में गैस बनना, खाना न पचना आदि में अत्यन्त लाभकारी। | 1–2 गोली दिन में दो बार शहद या मट्ठा या जल के साथ भोजन के बाद। |
| 293 | **शिलाजतु वटी** | शुद्ध शिलाजीत, शुद्ध गुग्गुलु, लौह भस्म, बंग भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म एवं अन्य। | मधुमेह (डायबिटीज) एवं समस्त प्रमेह रोगों में, मूत्रवह संस्थान संबंधी रोगों में लाभकारी एवं बल्य है। | 2–3 गोली जल या शहद या दूध के साथ। |
| 294 | **शुक्रमातृका वटी** | गोखरू, त्रिफला, तेजपत्र, एला, दारूहरिद्रा, धनिया, चव्य, श्वेत जीरा, तालीश पत्र, दाड़िम, शुद्ध टंकण, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध अभ्रक भस्म, शुद्धलौह एवं अन्य। | शुक्रमेह, प्रमेह, अश्मरी, मूत्रकृच्छ, अग्निमांद्य, दौर्बल्य, ज्वर, मूत्रवह संस्थान पर प्रभावकारी। | 1–2 गोली दिन में दो बार जल या दूध के साथ। |
| 295 | **सुखविरेचन वटी** | जमालगोटा, सौंठ एवं अन्य। | अर्श विबंध, विरेचनार्थ उपयोगी। | 1–2 गोली दिन में दो बार उष्ण जल के साथ। |
| | | शास्त्रोक्त रस | | |
| 296 | **आमवातारि रस** | शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, त्रिफला, चित्रक, गुग्गुलु, एरण्ड तेल एवं अन्य। | आमवात समस्त वात–व्याधियों में लाभकारी व आमपाचक की श्रेष्ठ औषधि है। | 1–2 गोली जल या एरण्ड तेल के साथ। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 297 | **अग्निकुमार रस** | काली मिर्च, बच, कुट्ज, नागरमोथा, शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, शुद्ध वत्सनाभ, सौंठ, बडी इलायची, लौह भस्म, अजमोद, शुद्ध टंकण, शुद्ध अभ्रक भस्म, चित्रकमूल एवं अन्य। | भूख न लगना, अम्लीयता, सिरदर्द, उदरविकार में लाभकारी। | 1–2 गोली जल के साथ सुबह–शाम। |
| 298 | **अर्शकुठार रस** | शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, लौह भस्म, शुद्ध अभ्रक भस्म, बेल गूदा, चित्रकमूल, शुद्ध कलिहारी जड़, काली मिर्च, शुद्ध सुहागा, यवक्षार, सेंधा नमक, गौमूत्र एवं अन्य। | खूनी बवासीर, विबन्ध भगंदर, अर्श एवं रक्तस्त्राव में अत्यन्त लाभकारी है। | 1–2 गोली दिन में दो–तीन बार मट्ठा या जल के साथ। |
| 299 | **चन्द्रकला रस** | शुद्ध पारद, ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, शुद्ध गंधक, मुस्ता क्वाथ, दाडिम स्वरस, दुर्वा स्वरस, कतकी स्वरस, गौ दुग्ध, सहदेवी, रामशीतला, शतावरी स्वरस, कुटकी, गिलोय, परपट, खस (उसीर), माधवी लता, श्वेत चंदन, सारिवा, द्राक्षा कषाय एवं अन्य। | पित्त रोग, वात पित्त, अंतरदाह, बाह्यदाह, ज्वर, भ्रम, मूत्रकृच्छ, रक्त प्रदर आदि रोगों में लाभकारी है। | 1–2 गोली दिन में 2 बार शहद व उष्ण जल से। |
| 300 | **चन्द्रामृत रस** | त्रिफला, त्रिकटु, चव्य, धनिया, जीरा, सेंधा नमक, शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, अभ्रक भस्म, शुद्ध टंकण, वासा स्वरस। | कास, श्वास, ज्वर, श्वसन संस्थान संबंधी विकारों को नष्ट करने में सहायक। | 1–2 गोली शहद, पान पत्र स्वरस अथवा अदरक स्वरस के साथ दिन में दो बार। |
| 301 | **एकांगवीर रस** | शुद्ध गंधक, रस सिंदूर, कांतलौह, तीक्ष्ण लौह, अभ्रक भस्म, नाग भस्म, ताम्र भस्म, वंग भस्म पिप्पली, सौंठ, काली मिर्च, त्रिफला क्वाथ एवं अन्य। | पक्षाघात, अर्दित, धनुर्वात, गृध्रसी आदि रोगों में लाभकारी एवं सभी प्रकार के वातरोगों में अत्यन्त लाभकारी है। | 125–250 मि.ग्रा. दिन में दो बार शहद अथवा पानी के साथ। |
| 302 | **गन्धक रसायन** | शद्ध पारा, शद्ध गंधक, सौंठ, काली मिर्च, सेंधा नमक, सोंचर नमक, मुल्कक्षार, नीबू स्वरस एवं अन्य। | त्वचारोग, कुष्ठ, वातरोग, जीर्ण ज्वर, डायरिया में लाभकारी। | 1–2 गोली दिन में दो बार गर्म जल या नींबू रस के साथ। |
| 303 | **इच्छाभेदी रस** | सौंठ, कालीमिर्च, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध टंकण, शुद्ध जयपाल। | अनाह, उदर रोग, विरेचनार्थ एवं इसकी थोड़ी सी मात्रा किसी भी प्रकार के विबंध को नष्ट करती है। | 1 गोली ठण्डे पानी से एवं चिकित्सक के परामर्शानुसार। |
| 304 | **कृमि कुठार रस** | कपूर, कुटज, त्रायमान, अजवाइन, वायविडंग, शुद्ध हिंग, शुद्ध वत्सनाभ, नागकेशर, विजया बीज, पलास बीज, मूसाकर्णी एवं अन्य। | कृमि रोग, पेट के कीड़े निकालने में लाभकारी। | 125–250 मि.ग्रा. दिन में दो बार शहद व स्वर्ण क्षीर मूल क्वाथ के साथ। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 305 | **लक्ष्मीविलास रस (नारदीय)** | शुद्ध अभ्रक भस्म, शुद्ध गंधक, कपूर, जातीफल, शोधित धतूरा बीज, विदारीकंद, शतावर, नागबला, अतिबला, गोक्षुर, नागवली एवं अन्य। | श्वास–कास, पेट व मूत्र संबंधी विकार, आंत विकार, कान, नाक संबंधी बीमारी, बबासीर, टी.बी. आदि व अनुपान के अनुसार सभी प्रकार के रोगों में लाभकारी। | 1–2 गोली शहद, दूध या पान पत्र रस के साथ ले, चिकित्सक की सलाह पर अदरक, तुलसी स्वरस या चिकित्सक के परामर्श अनुसार। |
| 306 | **लीलाविलास रस** | शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, ताम्र भस्म, अभ्रक भस्म, वंशलोचन, त्रिफला एवं अन्य। | अम्ल–पित्त, दाह संबंधी सभी प्रकार के रोगों में लाभकारी। | 1–2 गोली शहद से। |
| 307 | **प्रतापलंकेश्वर रस** | शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध बच्छनाभ, चित्रकमूल, अभ्रक भस्म, लोहभस्म, शंखभस्म, आरने कंडों की राख। | उन्माद, खांसी, सिरदर्द, वमन, अतिसार, प्रसवोपरान्त होने वाली विकारों में अत्यन्त लाभकारी। | 1–2 गोली दिन में 2 बार अदरक रस व शहद से। |
| 308 | **शिरःशुलादिवज्र रस** | शुद्ध पारद, शोधित गंधक, शोधित लोह भस्म, शुद्ध ताम्र भस्म, शुद्ध गुग्गुलु, त्रिफला, कूठ, मुलैठी , सौंठ, पिप्पली, गोक्षुर, वायविडंग, दशमूल क्वाथ भावना, घी एवं अन्य। | सिरदर्द, वात–पित्त–कफ, शिरःशूल, उदररोग, अर्धावभेद, सूर्यावर्त, आदि रोगों में लाभकारी। | 2–3 गोली दिन में दो बार जल या दूध के साथ। |
| 309 | **स्मृति सागर रस** | शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, शुद्ध मेनशिल, ताम्र भस्म, एवं अन्य। | अपस्मार, स्मृमि दौर्बल्य, उन्माद, अनिद्रा, आदि रोगों पर अच्छा लाभदायक। | 1–2 गोली दिन में दो बार जल या शहद के साथ। |
| 310 | **सूतशेखर रस (स्वर्ण रहित)** | शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, रौप्य भस्म, त्रिकटु, शोधित धतूरा बीज, शुद्ध टंकन भस्म, शुद्ध ताम्र भस्म, त्रिजात, नागकेसर, शंख भस्म, बेलगिरी, नरकचूर एवं अन्य। | मूत्र संबंधी विकार, अम्लपित्त, उदरविकार, वातशामक, पाचन संस्थान संबंधी सभी प्रकार के रोगों में लाभकारी। | 1–2 गोली दिन में दो बार शहद के साथ भोजन के बाद। |
| 311 | **श्वास कुठार रस** | शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, शुद्ध वत्सनाभ, शोधित सुहाग फूल, शुद्ध मैनसिल, काली मिर्च, सौंठ, पिप्पली एवं अन्य। | कफ, कास–श्वास हिक्का में उपयोगी श्वसन संस्थान पर प्रभावकारी। | 1–2 गोली दिन में दो बार अदरक के स्वरस के साथ भोजन के बाद। |
| 312 | **त्रिभुवनकीर्ति रस** | शुद्ध हिंगुल, शुद्ध वत्सनाभ, त्रिकटु, शुद्ध टंकण, पिप्पलीमूल, तुलसी स्वरस, अभ्रक स्वरस, धतूरा स्वरस, निर्गुण्डी स्वरस। | वात–कफज्वर, सन्निपात ज्वर, तरूण ज्वर, समस्त ज्वरों में लाभदायक। | 125–250 मि.ग्रा. दिन में दो बार शहद, अदरक स्वरस अथवा तुलसी स्वरस के साथ। |
| 313 | **वातगजांकुश रस** | रससिंदूर, लोहभस्म, सुवर्णमाक्षिक भस्म, शुद्ध गंधक, शुद्ध हरताल, शुद्ध बत्सनाभ, बड़ी हरड़ काकड़ासीगीं, सोंठ, कालीमिर्च, पिप्पली, अरणी की छाल और शुद्ध सोहागे के फूल, गोरखमुण्डी एवं निर्गुण्डी पत्र रस व अन्य। | वात रोग, गृध्रसी, उरूस्तम्भ, हनुस्तम्भ, मन्यास्तम्भ, पक्षाघात एवं अन्य सभी वात विकारों में लाभकारी। | 1–2 गोली दिन में 2 बार उष्ण जल के साथ। |

| शास्त्रोक्त गुग्गुलु | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 314 | **गोक्षुरादि गुग्गुलु** | गोक्षुर, शुद्ध गुग्गुलु, सोंठ, काली मिर्च, लौंग, पिप्पली त्रिफला, मुस्ता एवं अन्य । | प्रमेह, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात, प्रदर, वातरोग, वातरक्त, शुक्रदोष एवं पथरी में लाभ होता है तथा यह मूत्राशय और मूत्रनली के विकारों को शमन करता है। | 2–3 गोली दिन में 2–3 बार जल से। |
| 315 | **कैशोर गुग्गुलु** | शुद्ध गुग्गुलु, त्रिफला, गिलोय, सोंठ, काली मिर्च, लौंग, पिप्पली, वायबिडंग, गाय का घी एवं अन्य। | एकदोषज, द्विदोषज और पुराना शुष्क तथा स्त्रावयुक्त घुटनों तक फैला हुआ वातरक्त, घाव, खांसी, कुष्ठ, गुल्म, शोथ, उदररोग, पाण्डु प्रमेह, अग्निमांद्य, विवन्ध, प्रमेह पीड़िका आदि का नाश होता है। वायु व रक्तविकार संबंधी रोग नष्ट होता है। | 2 से 3 गोली दिन में दो बार दूध या रोगानुसार अनुपान के साथ। |
| 316 | **कांचनार गुग्गुलु** | कांचनार छाल, सोंठ, पिप्पली, काली मिर्च, त्रिफला, वरूण छाल, तेजपत्र, दालचीनी, शुद्ध गुगुलु एवं अन्य । | गलगण्ड, गण्डमाला, शोथ (थायराइड), अपच, ग्रन्थि, गले में और नाक के भीतर गांठे बढ़ना, कुष्ठ व भगन्दर आदि रोग। | 2–3 गोली सुबह–शाम जल से। |
| 317 | **लाक्षादि गुग्गुलु** | लाख, हरसिंगार, अर्जुन छाल, अश्वगंधा, बलामूल, शुद्ध गुगुलु एवं अन्य । | अस्थि भग्न, संधि वात, हृदय विकार, हड्डी संबंधी विकार में लाभकारी। | 2–3 गोली दिन में 2–3 बार जल या दूध से। |
| 318 | **महायोगराज गुग्गुलु** | सोंठ, पिप्पली, चव्य, पीपरामूल, हींग, चित्रकमूल छाल, अजवाइन, पीली सरसों, जीरा, रेनुका, इन्द्रजौं, पाठा, वायबिडंग, अतीस, गजपीपली, कुटकी, मुरवा, वच, हरड़, बहेडा, आंवला, गिलोय, दशमूल, नाग भस्म, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, मंडूर भस्म, रस सिंदूर एवं अन्य। | वातव्याधि, आमवात, पक्षाघात, संधिवात, वातरक्त, श्वांस, खांसी शोथहर, शूलहर एवं सभी प्रकार के रोगों में हितकारी। | 2–3 गोली सुबह–शाम अनुपान समस्त रोगों के भेदानुसार। |
| 319 | **पुनर्नवा गुग्गुलु** | पुनर्नवामूल, एरण्ड, सौंठ, शुद्ध गुग्गुलु, एरण्ड तेल, गुडुची, हरड़, बेहड़ा, आंवला, सौंठ, कालीमिर्च, पिप्पली, चित्रक, वायबिडंग एवं अन्य। | वातरक्त, गृध्रसी, वृद्धिरोग, आमवात, जानूग्रह, वस्तिगतशूल शोथ आदि रोगों में प्रभावकारी। | 2–3 गोली दिन में 2–3 बार जल या पुनर्नवा क्वाथ के साथ। |
| 320 | **रास्नादि गुग्गुलु** | रास्ना, गिलोय, एरण्डमूल, देवदारू, सोंठ, शुद्ध गुगुलु एवं अन्य। | आमवात, गृध्रसी (सायटिका), मन्यास्तम्भ, कर्णरोग, शिरोरोग, नाड़ीव्रण, गठिया, नासूर और भगंदर आदि। | 2–3 गोली सुबह व शाम गर्म जल/दशमूल क्वाथ के साथ। |
| 321 | **सिंहनाद गुग्गुलु** | त्रिफला क्वाथ, शुद्ध गंधक, एरण्ड तेल एवं अन्य। | आमपाचक, आमवात, पित्त–कफ से होने वाली व्याधियां, कुष्ठ, वातरक्त, उदरविकार आदि में उपयेागी। | 2 से 4 गोली दिन में 2 बार जल से। |
| 322 | **त्रयोदशांग गुग्गुलु** | बबूल, अश्वगंधा, हउबेर, गिलोय, शतावरी, गोखरू, देवदारू, रास्ना पत्ती, सौंफ, कपूरकचरी, यवानी, सौंठ, गुग्गुलु, घृत एवं अन्य। | कटिग्रह, गृध्रसी, हनुग्रह, बाहुशूल, जानू स्तम्भ, वात–कफ रोग, योनिदोष, अस्थिभग्न आदि रोगों में उपयोगी। | 1–2 गोली दिन में 2 बार जल से। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 323 | **त्रिफला गुग्गुलु** | हरड, बहेडा, आंवला, पिप्पली, शुद्ध गुगुलु, घी एवं अन्य। | समस्त प्रकार के वातजशूल, भगंदर, शोथ, बवासीर और रक्त विकृति नष्ट होती है, यह उत्तम रेचक, पाचन व वायुनाशक और रक्तशोधक है, वात व कुष्ठ रोगों को नष्ट करता है। | 2–3 गोली सुबह–शाम त्रिफला क्वाथ के साथ गुनगुने जल से। |
| 324 | **योगराज गुग्गुलु** | सोंठ, पिप्पली, चव्य, पीपलामूल, चित्रक, भुनी हींग, अजमोद, सरसो, जीरा, निर्गुन्डी, इन्द्रजौ, पाठा, गजपीपली, कुटकी, अतीस, भारगी, बच, मुर्वा, त्रिफला, शुद्ध गुगुलु व अन्य | वातरोग, कुष्ठ, अर्श, प्रमेह, वातरक्त, नाड़ी व्रण, गठिया, नासूर आदि सभी रोगों को ठीक करता है। | 2–3 गोली दिन में दो बार अनुपान भेदानुसार (वात रोगों मे रास्नादि क्वाथ के साथ) |
| | | शास्त्रोक्त लौह / मण्डूर / भस्म / पिष्टी | | |
| 325 | **गोदन्ती भस्म** | शोधित गोदंती | ज्वर, सिरदर्द, सूखी खांसी एवं समस्त पित्तज विकारों में लाभकारी। | 125 से 250 मि.ग्रा. मिश्री या शहद के साथ दिन में दो बार। |
| 326 | **जहरमोहरा पिष्टी** | जहर मोहरा को गुलाब जल से शोधन । | हृदय, मस्तिष्क को बल देने वाली, पित्त नाशक, दाह, यकृत विकार में हितकारी। | चिकित्सक के परामर्शासार। |
| 327 | **लौह भस्म** | शुद्ध लौह | रक्तअल्पता, ज्वर, सामान्य कमजोरी, लीवर रोग, शोथ, कामला, पाण्डु आदि रोगों में अत्यन्त लाभकारी। | 125 से 250 मि.ग्रा. दूध या शहद के साथ। |
| 328 | **मण्डूर भस्म** | शुद्ध मंडूर | पीलिया, शोथ, कामला, पाण्डु, संग्रहणी, रक्तअल्पता आदि में लाभकारी। | 125 से 250 मि.ग्रा. शहद के साथ दिन में दो बार। |
| 329 | **नवायस लौह** | सोंठ, मिर्च, पिप्पली, हरड, बहेड़ा, आंवला, नागरमोथा, वायबिडंग, चित्रक, लौह भस्म एवं अन्य। | प्लीहा, बवासीर, पाण्डु, कामला, कुष्ठरोग, हृदय विकार, रसायन और रक्तवर्धक, उदर विकार को ठीक करता है। | 1–2 गोली शहद, शक्कर, घी के साथ सुबह–शाम। |
| 330 | **प्रदरान्तक लौह** | शुद्ध लौह भस्म, शुद्ध ताम्र भस्म, शुद्ध हरताल, बंगभस्म, अभ्रक भस्म, कौडी भस्म, त्रिफला, त्रिकटु, चित्रक, वायबिडंग, सेंधा नमक, समुद्री नमक, बिड नमक, सोचर नमक, रेह नमक, चव्य, पिप्पली, शंख भस्म, वचा, कुष्ठ, कचूर, पाठा, देवदारू एवं अन्य। | रक्त प्रदर, श्वेत प्रदर, स्त्रीरोग विकार, पीलिया, अस्थमा, भूख न लगना, मूत्राशय विकार में लाभकारी है। | 1–2 गोली शहद, शक्कर, घी के साथ या पंचवल्कल कषाय से। |
| 331 | **पुनर्नवादि मण्डूर** | पुर्ननवा, निशोथ, त्रिकटु, वायविडंग, चित्रक, पोखरमूल, हल्दी, दारूहल्दी, दंतीमूल, त्रिफला, चव्य, इन्द्रजौ, कुटकी, पीपरामूल, नागरमोथा व शोधित मंडूर भस्म एवं अन्य। | शोथहर, कामला एवं पाण्डु, आंत को मजबूती देता है। कृमिनाशक, उदर विकृति, रक्तअल्पता में लाभकारी। | 1–2 गोली दिन में दो बार, शोथ हेतु गौमूत्र के साथ, पीलिया में पुनर्नवा स्वरस के साथ, उदर विकार में त्रिफला क्वाथ के साथ। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 332 | **सप्तामृत लौह** | मुलैठी, हरीतिकी, बहेडा, आंवला, शोधित लौह भस्म एवं अन्य। | सभी प्रकार के नेत्ररोगों की उत्तम औषधि है, रक्त विकार, ज्वर, अम्लपित्त एवं पाचन संस्थान संबंधी रोगों में लाभकारी। | 1–2 गोली दिन में दो बार शहद या दूध या घी के साथ भोजन के बाद। |
| 333 | **सर्वज्वरहर लौह** | चित्रक, त्रिफला, त्रिकटु, विडंग, कुटकी, नागरमोथा, गजपीपल, पिपलीमूल, उशीर देवदारू, चिरायता, हाउबेर, कंठकारी, सहजन, मुलेठी, कुटज, लौह भस्म। | ज्वर, प्लीहा रोग, यकृत रोग, हृदय रोग सभी प्रकार के जीर्ण ज्वर की उत्तम औषधि है। | 1–2 गोली दिन में दो बार शहद अथवा गुड़ची सत्व के साथ। |
| 334 | **शिलाजित्वादि लौह** | शुद्ध शिलाजीत, पिप्पली, सौंठ, काली मिर्च, शहद, शुद्ध स्वर्णमाक्षिक भस्म, शुद्ध लौह भस्म एवं अन्य। | रक्तक्षय, बल्य, प्रमेह सामान्य कमजोरी आदि पर लाभकारी। | 1–3 गोली दिन में दो बार शहद या दूध के साथ। |
| 335 | **स्वर्णमाक्षिक भस्म** | स्वर्णमाक्षिक | पीलिया, पित्तविकार, विषमज्वर, पाण्डु, कामला, कुष्ठ, प्रमेह में उपयोगी। | 125 से 250 मि.ग्रा. गिलोय घनसत्व या शहद के साथ। |
| 336 | **टंकण भस्म** | शुद्ध टंकण | कास–श्वास, ज्वर, कफघ्न उत्तम कफ निःसारक एवं इसका श्वसन संस्थान पर अत्यन्त उपयोगी प्रभाव है। | 125 से 250 मि.ग्रा. शहद के साथ। |
| 337 | **विडंगादि लौह** | विडंग, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, मरिच, जातिफल, जायफल, लौंग, सौंठ, शुद्ध टंकण, पिप्पली, शुद्ध हरतल, लौह भस्म आदि। | अग्निमांद्य, अरूचि, शूल, विसूचिका, अर्श, कृमि, शोथ, ज्वर, हिक्का, कास श्वास आदि रोगों में उपयोगी। | 1–2 गोली दिन में दो बार शहद से। |
| | | शास्त्रोक्त पर्पटी | | |
| 338 | **पंचामृत पर्पटी** | शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध लौह शुद्ध भस्म, शुद्ध अभ्रक भस्म, शुद्ध ताम्र भस्म। | गृहणी, अर्श, छर्दी, अतिसार, ज्वर, अरूचि, अग्निमांद्य सभी पाचन संबंधी रोगों में लाभकारी। | 125–250 मि.ग्रा. दिन में दो बार शहद व घी के साथ। |
| 339 | **श्वेत पर्पटी** | कलमी शोरा, फिटकरी, नौसादर। | अम्ल पित्त, अश्मरी, मूत्र–कृच्छ, मूत्रग्रह एवं सभी प्रकार के मूत्रवह संस्थान संबंधी रोगों में लाभकारी। | 500 मि.ग्रा – 1 ग्राम दिन में दो बार पानी या नारियल के पानी के साथ। |
| | | शास्त्रोक्त अवलेह /पाक | | |
| 340 | **अश्वगंधादि लेह** | शर्करा, अश्वगंधा, सारिवा, श्वेत जीरा, मधुस्नूही, द्राक्षा, घृत, शहद, एला आदि। | बल्य, रसायन, रक्त विकार, अर्श, उपदंश आदि रोगों में लाभकारी। | 1–2 चम्मच दूध के साथ दिन में दो बार। |
| 341 | **हरिद्रा खण्ड** | हल्दी, शक्कर, घी, सोंठ, कालीमिर्च, दालचीनी, लौंग, वायविडंग, त्रिफला, नागकेशर, नागरमोथा, शुद्ध लौह भस्म, निशोथ व अन्य। | शीतपित्त, चकत्ते, त्वचा रोग, ज्वर, श्वास–कास रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि कारक। | 3 से 6 ग्राम गुनगुने दूध के साथ। |
| 342 | **वसावलेह** | वसा स्वरस, सिता, सर्पी, पीपली, मधु | कास, श्वास, ज्वर, रक्तपित्त, राजक्षमा, पित्तशूल, | 1 से 2 चम्मच दूध या पानी के साथ। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | शहद | | |
| 343 | **विन्ध्य हर्बल शहद** | जंगल का शहद | शहद शीतल, हल्का, मधुर, ग्राही, नेत्रों के लिए हितकारी, अग्निदीपन, स्वर को उत्तम करने वाला, व्रण शोधक, सुकुमारता लाने वाला, कसैले रस वाला, बुद्धिकारक, और मेद, तृष्णा, वमन, श्वास, हिचकी, अतिसार, खांसी, पित्त, रक्तविकार, कफ, प्रमेह, ग्लानि, कृमि, दाह, क्षत आदि में उपयोगी। | 2–3 चम्मच शहद का सेवन ठण्डे जल या ठण्डे दूध के साथ (जैसी जरूरत हो) करें। |
| | | विन्ध्य हर्बल्स पेटेंट वेटनरी चूर्ण/क्रीम/टेबलेट | | |
| 344 | **एण्टी डायरो वेट चूर्ण** | बरगद छाल, पीपल छाल, गुलर छाल, भारंगी, विजयसार, धावईफूल, हरड़, बेहड़ा, आंवला, हल्दी, सौंठ, शुद्ध गुग्गुलु, अर्जुन छाल, कपूर एवं कुटजछाल। | अतिसार, रक्तातिसार, उदरशूल, ऋतुजन्य | गाय/भैंस/घोड़ा– 50 ग्राम<br>भेड़/बकरी– 15 ग्राम<br>ऊंट– 100 ग्राम.<br>पशुओं हेतु। |
| 345 | **कफ वेट चूर्ण** | सौंठ, कालीमिर्च, पिप्पली, भारंगी, अडूसा, गिलोय, शुद्ध टंकण, मुलेठी, तुलसी एवं हल्दी। | श्वांस–कास, ज्वर, अरूचि एवं अग्निमांद्य। | गाय/भैंस/घोड़ा– 50 ग्राम.<br>भेड़/बकरी– 15 ग्राम<br>ऊंट– 100 ग्राम. |
| 346 | **डायजेस्टो वेट चूर्ण** | त्रिफला, त्रिकटु, वायबिडंग, नागरमोथा, बेल, जीरा, अजवाइन, अजमोद, सेंधा नमक, बिड नमक, वच, धनिया, इंद्र जौ, कुटज छाल, हींग, गिलोय, अमलतास गूदा, भृंगराज, सनायपत्ती, सौंफ, चक्रमर्द चूर्ण, चित्रकमूल, शतावरी, गन्ने के जड़। | अरूचि, अग्निमांद्य, कुपचन, गैस। | गाय/भैंस/घोड़ा– 50 ग्राम.<br>भेड़/बकरी– 15 ग्राम<br>ऊंट– 100 ग्राम. |
| 347 | **हिंग्वाष्टक वेट चूर्ण** | सौंठ, कालीमिर्च, पीपल, काला जीरा, सफेद जीरा, हींग, अजमोद एवं सेंधा नमक। | अरूचि, उदरशूल, पाचन संबंधी रोग। | गाय/भैंस/घोड़ा– 50 ग्राम.<br>भेड़/बकरी– 15 ग्राम<br>ऊंट–100 ग्राम. |
| 348 | **लेक्टो वेट चूर्ण** | अश्वगंधा, शतावरी, विदारीकंद, तिल्ली, सौंठ, बेल, मुलेठी, उड़द दाल, बला, गोखरू। | यह सामान्यतः पशुओं के आहार के साथ मिलाकर खिलाने से दूध की मात्रा बढ़ती है। गर्भवती गाय को चूर्ण खिलाने पर बहुत लाभदायक है। | गाय/भैंस/घोड़ा– 50 ग्राम.<br>भेड़/बकरी– 15 ग्राम,<br>ऊंट– 100 ग्राम. |
| 349 | **सेप्टो वेट चूर्ण** | शुद्ध गंधक, नीम पंचांग, पलाश बीज, करंज बीज, विडंग, धायफूल, हरड़, कुटकी, काला जीरा, सनायपत्ती, हिंगोट, अजवाइन एवं सौंफ। | ज्वर, मूत्र में जलन, या मूत्र का रंग बदलना। श्वास–कास रोगप्रति रोधक क्षमता बढ़ाती है और कृमिनाशक। | गाय/भैंस/घोड़ा –50 ग्राम.<br>भेड़/बकरी – 15 ग्राम,<br>ऊंट – 100 ग्राम. |
| 350 | **शतावरी वेट चूर्ण** | शतावरी चूर्ण। | सामान्य पौष्टिक, जानवरों को लगातार देने से प्रजनन अंग स्वस्थ होते हैं, कमजोरी तथा दूध की मात्रा को बढ़ाते हैं। | गाय/भैंस/घोड़ा– 50 ग्राम.<br>भेड़/बकरी– 15 ग्राम,<br>ऊंट – 100 ग्राम. |